करो जी, यहां हस्ताक्षर करो। वह कहता, मर तो लेने दो अब। वह बांट की हुई थी न। मुझे उन्होंने बताया। फिर वह कहता, ओये ! अब मर तो लेने दो, अब तो समय दे दो और इसलिये -

एक तिसना बडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ।। (प ष्ठ ६१६)

मरना भी किसी को स्मरण नहीं। लेकिन तृष्णा -

सहस खटे लख कउ उठि धावै।
त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावे।। (प ष्ठ २७८)

सौ मिल जायें तो कहता सहस्र हो जायें। हज़ार आ जाये, लाख हो जाये, लाख वाले कहते हैं करोड़ हो जाये। बस ! दौड़ जाते हैं सब, कोई खड़ा देखा है आपने कभी ? भई बस अब नहीं आवश्यकता कभी खड़ा देखा ? कोई नहीं, बिल्कुल नहीं, कहेंगे और हो जाये। इसलिये भाई, यह बड़ा रोग है। चलिये -

गुर प्रसादि नानक इहु जानु।।

गुरू की कृपा से इस बात को जान लें, भई परमेश्वर का हुक्म माने, जो परमेश्वर करता है।

जो तुधु भावै साई भली कार।
तू सदा सलामति निरंकार।। (पृष्ठ ३)

जो परमेश्वर तुमने किया, बहुत अच्छा किया।

जो जानै तिसु सदा सुख होइ।।

जो इस बात को जान लेगा उसको सदा सुख हो जायेगा, आत्म सुख प्राप्त हो जायेगा।

आपि मिलाइ लए प्रभु सोइ।।

उसको स्वयं प्रभु मिलायेगा। उसको मिलने की आवश्यकता नहीं, आप उसको आप मिलायेगा प्रभु। वे गुरू गोबिन्द सिंह घोड़े पर बैठे जा रहे थे और साथ में एक सिक्ख था। आगे एक साधु सा सिक्ख था, वह लिखा हुआ है, वही साखी (कथा) इतिहास में। वह कहता गुरू साहिब को, मुझे गुरूमंत्र दीक्षा दे दो। वे कहते - समय का विचार तो कर। उसी को वह कहने लग गया 'वेला वकत विचार' वेला, वक्त विचार गुरू गोबिन्द सिंह उधर चले गये, जिधर जाना था। वे जब चले गये, वे कहते वहां चलो। वह सिक्ख तो वहीं बैठा है। वे जब दूसरे दिन आये, वह वहीं बैठा 'वेला वकत विचार' 'वेला वकत विचार' कहता जा रहा था। गुरू साहिब कहते, लो करो बात इसकी। उसने कहा गुरू मंत्र दे दो मुझे। दूसरे दिन आकर उस पर कृपा की, घोड़े से उतरे, फिर उसके शीश पर हाथ रखा, फिर उसके द्वार खोले तब गये। वह कहता - लो, कर लो सिक्ख की बात। उसको यह नहीं था पता, यह क्या है ? गुरू साहिब ने कहा - 'वेला ककत विचार' भई समय तो देख ले। उसने उसी समय ही आरम्भ कर दिया, भई गुरू मंत्र दे गये। वह दूसरे दिन गुरू साहिब दोबारा आये, उसको मुक्त किया तब पीछा छूटा। ले, निश्चय ऐसी वस्तु है। वह अर्न्तयामी है, न परमेश्वर उसका जो कुछ किया हुआ है, उसके हुक्म को मान ले, भई ठीक है।

ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु।।

वह बड़ा धनी है, बड़ी कुलवाला, वही बड़े आदर मान वाला है।

जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु।।

जिसने अपने हृदय में भगवान् को अपना स्वरूप जान लिया वह सब कुछ है।

धनु धनु धनु जनु आइआ।।

ऐसे व्यक्ति धन्य है भाई।

जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ।।

जिसकी कृपा से समस्त जगत का उद्धार हो गया। अब तुम देख लो सच, कबीर ने कितने पार किये ? गुरू नानक देव और दसों पातशाहियों ने कितनों का उद्धार किया, त्रिलोचन ने कितनो का उद्धार किया, त्रिलोचन ने कितनों का उद्धार किया ? नामदेव ने कितने पार किये ? रामानन्द ने 'तेरा' (तेरह) का उद्धार किया। इन्होंने लिखे हुये हैं। इसलिये भाई ! समस्त संसार का उद्धार करने के लिये आते हैं। शेष सब कृत्रिम बाते हैं, व्यर्थ होती हैं। ये शराअ् की बातें बनाई हुई भिन्न

भिन्न, अपनी अपनी ये गलत होती हैं। यह समस्त काम गलत बताता है, चाहें तुम उसको कितना अच्छा मानते हो है गलत। तुमने सब में ईश्वर को देखा नहीं, जब तक सब में ईश्वर नहीं देखते। सब में ईश्वर तो भाई कन्हैया ने देखा था, दशम् पातशाह ने कृपा की, सब को पानी पिलाता गया। तुम यह बताओ ? जब वे लड़ते थे मुसलमान, उनको पानी जाकर पिलाता था। वे गोली चलाना बंद कर देते थे, सिक्ख कहते आ गया, वह पानी वाला सिक्ख है, गोली बंद कर देते थे। इसलिये, क्यों ? उसने एकता देख ली थी सब में। इसका समस्त कार्य सिद्ध हो गया। जिसने सब में ईश्वर के दर्शन नहीं किये, उसका कोई कार्य सिद्ध नहीं होगा। वह तो भेदवादी है, उसको बुरा, उसको भला। यह मन कमबख्त ऐसा बिगड़ा हुआ है यह इधर से हटता ही नहीं है शीघ्र। चलिये -

जन आवन का इहै सुआउ।।

ये संसार में जितने महापुरूष आये हैं - दास कबीर, नामदेव, धन्ना, ईसा, मुहम्मद जितने भी आये हैं, उनका प्रयोजन यही है भई सत्य मार्ग पर चलो। ईसा ने कितनों को सत्य मार्ग पर डाला, कितने कष्ट उठाये लेकिन सब को सत्य मार्ग पर डाल दिया। वह कैसे लूट रहे थे सब। जब किसी के बड़े का देहांत होता था वे पूछते थे भई हमारा यह बड़ा बाप कहां जायेगा ? वे कहते - कितने रूपये देगा ? वे नीचे एक व्यक्ति को बिठा देते थे, उनके इतिहास में लिखा हुआ है, घर वालों से पूछते थे यह कितने रूपयों में जायेगा ? वह कहता - दस हज़ार के साथ। जब दे देते, जाओं स्वर्ग में जायेगा। कितनी अंधेर गर्दी मचा रखी थी, यह तुम्हारें पंडितो, काज़िओं फलां आदि का कितनी अंधेर गर्दी मचा रखी है सबको अलग-अलग किये जा रहे हैं। पहली बार हम कश्मीर गये मुसलमान इतना प्यार करते थे, हम कभी समीप जाते तो उठकर खड़े हो जाते साधु समझ कर। जब दूसरी बार गये, हमें हाथ से पानी नहीं दिया, कहते काफिर हैं। यह किन लोगों ने डाला ? वह काज़ियों ने डाला। ये सब ही काम बिगाड़ने वाले हैं, संवारने वाला जो धुर से आया है - वह है। ये जितने भी आये इन्होंने संसार को तार दिया, इन्होंने लोगों को सत्य मार्ग पर डाला, अन्य किसी को नहीं, क्यों ? उनको सत्य का मार्ग प्राप्त ही नहीं हुआ। जब तक उनको ही नहीं प्राप्त हुआ सत्य तुम्हे कैसे बतायेंगे भई ?

जन के संगि चिति आवै नाउ।।

जिस प्रभु के दास के पास जाने से नाम याद आ जाये समझ लो भई यह बहुत अच्छा बस !

आपि मुकतु मुकतु करै संसारू।।

वे स्वयं मुक्त थे।

जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए।

जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए।। (प॰ ७४६)

ये पर उपकारी आये। ये स्वयं मुक्त थे और संसार को मुक्त करने वाले हैं।

नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारू।।

उनको नमस्कार करो, जो स्वयं मुक्त है और लोगो को मुक्ति का मार्ग बताता है।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू। ❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

११

सोरठ महला ५।।

गुर मिलि प्रभू चितारिआ।। कारज सभि सवारिआ।।
मंदा को न अलाए।। सभ जै जै कारू सुणाए।। १।।
संतहु साची सरणि सुआमी।।
जीअ जंत सभि हाथि तिसै कै सो प्रभु अंतरजामी।। रहाउ।।
करतब सभि सवारे।। प्रभि अपुना बिरदु समारे।।
पतित पावन प्रभ नामा।। जन नानक सद कुरबाना।। २।।

(पृष्ठ ६२७)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु ! सतिनाम श्री वाहिगुरु !!

सोरठि महला ५।।

पंचम पातशाह-

गुर मिलि प्रभू चितारिआ।।

जब हम गुरू रामदास जी को मिले, हमने प्रभु को याद किया। प्रभु का नाम सुमिरन चल गया, हमारे भीतर नाम का प्रवाह चल पड़ा।

कारज सभि सवारिआ।।

हमारे समस्त कार्य सिद्ध हो गये, अपने आप ही सभी कार्य सिद्ध हो गये। एक हमारे जन्म स्थान 'दौद' के समीप गांव **'लसोई'** है तीन मील पर। वहां एक संत रहते थे, उसका नाम **'माडू दास'** था। पहले उसने बारह वर्ष तप किया। बारह वर्ष के पश्चात् गांव में एक स्थान था बहुत ऊंचा, उसको **'जोगी पीर'** कहते थे। जंगल में, वहां फिर बैठ गया। बारह वर्ष वहां सुमिरन करता रहा। रोटी, लोग रख आते थे, हमारे बुजुर्ग। हमने भी स्वयं देखा है। रोटी जब उसका दिल चाहता खा लेता था। ऊंचा स्थान था और वह जो बर्तन व पोणा (लपेटने के लिए वस्त्र) होता था उसको जोर से फैंकता और लोग आकर उसे उठा लेते थे, जिनका होता था। बारह वर्ष के पश्चात् वह लसोई चला गया। जंगल में गुफा बना ली, वहां फिर उसने तप किया। जो भी उन्होंने उपदेश दिया पांच सात को, दोबारा वे घर के काम के न रहे, नाम सुमिरन ही चला उनका। हरनाम दास एक खत्री था, वह उसके पास छः वर्ष जाता रहा, वह गालियां भी देता था। चल निकल जा यहां से कह देता। छः वर्ष बाद उसने आप ही बताया हरनाम दास ने, जब मैं गया। उसने कहा बैठ, तुझे उपदेश दें, उसने उपदेश दे दिया। चार मास वह घूमता रहा, केवल जंगलों में। एक उसकी आवाज़ 'रामा राम राम, रामा राम राम' यह उसकी आवाज़। चार मास पश्चात् उसके घर वालों ने लाकर जंजीर लगा दी उसको, भई यह पागल हो गया। एक बुद्धिमान व्यक्ति बुलाओ। कहता पागल तो तुम हो, मैं पागल नहीं, बुद्धिमान को जंजीर में जकड़ दिया। वह जब आया कहता, पागल तो तुम हो, यह तो बुद्धिमान है, खोलो इसकी जंजीर। उसने खुला दी। फिर उन गांवों में रहा, बहुत अच्छा संत था, हमने देखा है, हम एक साथ भी रहे दस बारह दिन। जब आठ पहर नाम के साथ उसका मन जुड़ा। अंत में मृत्यु भी उसकी ऐसे ही हुई। वह कहता ओ मुसलमानों ! तुमें यहां से दौड़ना पड़ेगा, सिक्खों हिन्दुओं ने वहां से दौडना है, लेकिन यह सब कुछ मैंने नहीं देखना। फिर यह हुआ सब कुछ। जो कुछ भी उसने कहा था, वही हुआ। वह फक्कड़ (मस्त मौला) संत था।

गुर मिलि प्रभू चितारिआ।।

वह हरनाम दास कहता होता था, माडू दास! तेरा स्वर्ग में निवास हो, बैकुण्ठ में, पार लगा दिया, निकाल दिया। माडू दास ने साथ मिलकर राम नाम चल पड़ा।

कारज सभि सवारिआ।।

सभी कार्य सम्पन्न हो गये, मुक्ति भी हो गई, जन्म-मरण से छूट गये, संसार के समस्त कार्य सिद्ध हो गये, बड़ा कार्य तो मुक्ति है। मोक्ष भी हो गई,

जन्म-मरण हो गई, जन्म-मरण कट गया।

मंदा को न अलाए।।

किसी को बुरा न कहना, यह बात गुरू अर्जुन देव जी कहते, देखना किसी को बुरा न कहना। **'घट घट मै हरि जू'** है। सबके हृदय में परमेश्वर बैठा है। यदि तुम बुरा कहोगे, परमेश्वर को ही कहोगे बुरा और तो कोई सत्ता ही नहीं। इसकी अपनी तो सत्ता कोई है नहीं, इसलिये किसी को बुरा न कहना।

सभ जै जै कारू सुणाए।।

सब को जय जयकार सुनाया कर। जय हो भई परमेश्वर की। लोग कहते हैं, जय हो रविदास की, जय हो कबीर की, जय हो जयदेव की। इसलिये जब इस जीव पर कृपा होती है, लोग इसकी अपने आप ही जय जयकार करने लग जाते हैं।

संतहु साची सरणि सुआमी।।

संतो! एक मैं आपको, गुरू साहिब कहते यह बात बहुत सुंदर बताता हूँ नानक की, शरणागति ले लो मालिक की। यह सच्ची प्रीति है, यह तुम्हें सत्य के साथ मिला देगी। कबीर ने भी लिखा है -

सरपनी ते ऊपरि नही बलीआ।
जिनि ब्रहमा बिसनु महादेउ छलीआ।। (प ष्ठ ४८०)

माया से कोई बड़ा नहीं, जिसने बड़े तीन देवताओं को छल लिया। पुराण पढ़कर देख लो, इस माया से कोई बड़ा नहीं। कबीर साहिब ने कहा तुम ? वह कहता -

स्रपनी स्रपनी किआ कहहु भाई।।
जिनि साचु पछानिआ तिनि स्रपनी खाई।। (प ष्ठ ४८०)

सत्य की पहचान, माया से अलग कर देती है। जब इसको सत्य की पहचान हो जाये, फिर यह माया की ओर नहीं जाता। एक बालक को आप खोटा रूपया दे दें, जब वह किसी के पास जायेगा, वह कहेगा 'खोटा' है और फिर उसको खरा

रूपया दे दो, वह खोटे को फैंक देगा। इसलिये जब उसको सत्य की पहचान हो जाये फिर वह जीव असत्य के पास नहीं जाता। इसको अभी सत्य की पहचान नहीं हुई। अभी यह असत्य को सत्य समझता है, अनात्मा को आत्मा समझता है। इसलिये भाई ! सत्य की पहचान से जीव का उद्धार हो जाता है।

जीअ जंत सभि हाथि तिसै कै

ये जितने भी जीव-जन्तु हैं, सब परमेश्वर के आधीन है। इनका खाना-पीना, बड़ा-छोटा, भला-बुरा, सब परमेश्वर के हाथ में हैं। परमेश्वर कृपा के साथ बदल देता है।

जा कउ अपुनी करै बखसीस।।
ता का लेखा न गनै जगदीस।। (प ष्ठ २७७)

सदन ने क्या काम किया ? शरण पड़ गया। लालो ने क्या काम किया ? शरण पड़ गया। कौडे राक्षस ने क्या काम किया ? शरण पड़ गया। वेश्या (जीवन्ती नाम की) ने क्या काम किया ? शरण पड़ गई।

अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा। (प ष्ठ ६३२)

अजामिल को सब जानते थे, बड़ा पापी है, लेकिन एक क्षण में, आंखों के पलक मारते ही मुक्त हो गया। जब इसने नारायण कहा जितने भी यम गण थे निकाल दिये और राम गण आ गये। उन्होंने कहा यह पापी है, और हमें तुम आकर निकालते हो। यह पापी है, सब जानते हैं। कहता - क्या कहता है ? कहता - नारायण। फिर नारायण तो समस्त पापों को काट देता है।

रामानंद सुआमी रमत ब्रहम।।
गुर का सबदु काटै कोटि करम।। (प ष्ठ ११९५)

गुरू का शब्द तो करोड़ों कर्मों को काट कर रख देता है, सकाम पुण्यों एवं पापों को, फिर तो मुक्ति हो जाती है। यह कहता क्या है ? कहता - नारायण। फिर यहां तुम्हारा क्या काम है ? इसलिये भाई ! यह तर (मुक्ति हो) जाता है। नाम में इतनी शक्ति है भाई !

जीअ जंत सभि हाथि तिसै कै

वह परमेश्वर के हाथ है समस्त जीव-जन्तु की मुक्ति करनी और कर्मों के अभियान वालो को बांधना।

सो प्रभु अंतरजामी।। रहाउ।।

वह परमेश्वर सब के भीतर अन्तःकरण में सब को देखता और जानता है, प्रकाश करने वाला है।

करतब सभि सवारे।।

हमारे समस्त कर्मों को संवार दिया गुरू अर्जुन देव जी कहते। अमृतसर तीर्थ बना दिया, तरन तारन बना दिया, श्री गुरू ग्रन्थ साहिब की बीड़ बंध गई, करतार पुर बस गया। जो भी हमें कहा था हमारे सब काम परमेश्वर ने कर दिये।

प्रभि अपुना बिरदु समारे।।

और परमेश्वर ने कितना काम किया। अपना प्रण, हम जब शरण पडे, उसका एक धर्म है, जो शरण आये, उसको गले लगा लेता है, पाप पुण्य काट देता है। उसने अपना प्रण नहीं छोड़ा। उसने अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया।

पतित पावन प्रभ नामा।।

वह जो प्रभु का नाम है, यह पतितों को पवित्र कर देता है। बाल्मीकि कितना पापी था, राम नाम ने पवित्र कर दिया। गणिका कितनी पापिन थी, राम नाम ने पवित्र कर दी। यह नाम पवित्र करने वाला है। गुरू अर्जुन देव जी कहते - भाई ! नाम न छोड़ना।

जन नानक सद कुरबाना।।

श्री गुरू अर्जुन देव जी कहते - उस परमेश्वर से मैं सदा कुर्बान जाता हूँ।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू।। ❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

१२

सोरठि महला ५।।

साहिबु गुनी गहेरा।। घरू लसकरू सभु तेरा।।
रखवाले गुर गोपाला।। सभि जीअ भए दइआला।। १।।
जपि अनदि रहउ गुर चरणा।। भउ कतहि नही प्रभ सरणा।।रहाउ।।
तेरिआ दासा रिदै मुरारी।। प्रभि अबिचल नीव उसारी।।रहाउ।।
बलु धनु तकीआ तेरा।। तू भारो ठाकुर मेरा।। २।।
जिनि जिनि साधसंगु पाइआ।। सो प्रभि आपि तराइआ।।
कर किरपा नाम रसु दीआ। कुसल खेम सभ थीआ।। ३।।
होए प्रभू सहाई।। सभ उठि लागी पाई।।
सासि सासि प्रभु धिआईए। हरि मंगलु नानक गाईऐ।। ४।।
(पष्ठ ६२२)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु ! सतिनाम श्री वाहिगुरु !! चलो जी -

सोरठि महला ५।।

धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि।।
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरू अरजुनु परतख हरि।। (पष्ठ १४०८)

श्री गुरू अर्जुन देव, अब पांचवीं गद्दी पर आ गये। ईश्वरीय वाणी जो परमेश्वर की ओर से आई, उन्होंने उसका उच्चारण किया, उसको हुक्मनामा कहते हैं। यह गुरू नानक का हुक्मनामा है। जो हुक्मनामा होता है, वह सही होता है। इसलिये -

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ।।

नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ।। (प ष्ठ १)

जब यह जीव हुक्म में आ जाता है, फिर कोई बात नहीं करता। उस परमेश्वर का हुक्म -

जो तुधु भावै साई भली कार।।

तू सदा सलामति निरंकार।। (प ष्ठ ३)

जो परमेश्वर करता है, उसका हुक्म जो होता है, उसको अपने शीश पर सही करके मानना चाहिये।

साहिबु गुनी गहेरा।।

वह **'साहिबु'** सब का स्वामी परमेश्वर है, सर्वगुण सम्पन्न है। उसमें सब गुण हैं, समस्त शक्तियां हैं। उसके घर में कोई वस्तु ऐसी नहीं जो न हो। वह जब दयालु हो जाये तो सब काम ठीक हो जाते हैं।

जन नानक हरि भए दइआला

तउ सभ बिधि बनि आई।। (प ष्ठ २१६)

जब परमेश्वर दयालु हो जाये तो समस्त विधियां बन जाती हैं। परमेश्वर से बड़ा, संसार में कोई नहीं है। सब से बड़ा साहिब, मालिक, परमेश्वर है। जो कुछ करता है, वह बिल्कुल सही करता है। जीव के कर्मों के अनुसार करता है। कृपा करता है तो भी वह अपनी खुशी से करता है, वह बड़ा कृपालु और दयालु है।

धरु लसकरू सभु तेरा।।

यह जो हमारा घर, सम्पत्ति जो कुछ है शरीर तक, हे परमेश्वर ! गुरू अर्जुन देव जी कहते, यह आपका है। यह आपकी है, आपकी कृपा है।

रखवाले गुर गोपाला।।

रक्षक दो होते हैं।

राखा एकु हमारा सुआमी।। सगल घटा का अंतरजामी।। (प ष्ठ ११३६)

सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।

नानक जीअ का इहै अधार।। (प ष्ठ २६५)

गुरू ब्रह्मज्ञानी और गोपाल समस्त संसार का मालिक परमेश्वर, यह हमारा रक्षक है। परमेश्वर के अतिरिक्त अन्य हर्ता-कर्ता कोई नहीं। सृष्टि की उत्पत्ति, पालना, लय, परमेश्वर करता है। उसके हुक्म के साथ सब कुछ होता है। उसके हुक्म में व्यक्ति को हाथ जोड़ना चाहिये। जो उसका हुक्म है, वह सही है।

सभि जीअ भए दइआला।।

सारे जीव दयालु हो गये, जब आपकी कृपा हो गई। हे परमेश्वर! हे सतगुरू!!

तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा तू नानक मनि भाणा।।

घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा।। (प ष्ठ ६६४)

परमेश्वर जितना बड़ा कोई नहीं। हर्ता कर्ता परमेश्वर है और गुरू वह होता है जो परमेश्वर का मार्ग **'नाम'** बता दे। गुरू का काम होता है, नाम बताना, परमेश्वर का काम है कृपा, दया, मेहर करनी।

कबीर सेवा कउ दुइ भले एकु संतु इकु राम।।

रामु जु दाता मुकति को संतु जपावै नामु।। (प ष्ठ १३७३)

संत ने नाम बताना है परमेश्वर का, और जपना जिज्ञासु ने है। वह नाम जो बताया हुआ हो उसको दिन-रात रटता रहे और परमेश्वर को नमस्कार करता रहे, वह परमेश्वर दाता है।

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई।। (प ष्ठ २)

उसको कभी भूलना नहीं दाता को। वह समस्त जीवों का दाता है। दात परमेश्वर के हाथ में होती है, गुरू के हाथ में, नाम बताना होता है। ये सब सही वस्तुएं हैं।

जपि अनदि रहउ गुर चरणा।।

लेकिन गुरू के चरणों में लगकर, उस नाम को जपते रहो।

१ ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।जपु।। (प ष्ठ १)

वास्तव में यह ईश्वरीय वाणी है, यहां तक। इससे आगे श्लोक है सत्य का। यह है ईश्वरीय वाणी, इसमें किसी का नाम नहीं आया।

आदि सचु जुगादि सचु।। है भी सचु नानक होसी भी सचु।।

(प ष्ठ १)

इस श्लोक में गुरू का नाम आया है। गुरू नानक साहिब का।

जोति रूपि हरि आपि गुरु नानकु कहायउ।।

ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ।। (प ष्ठ १४०८)

वह परमेश्वर का नाम जो हो, जपना है और गुरू ने नाम बताना है। उस नाम को कभी छोड़ना नहीं है।

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई।। (प ष्ठ २)

कभी उसको भूलना नहीं है।

नाम संगि जिस का मनु मानिआ।।

नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।। (प ष्ठ २८१)

नाम संगी सो मनि न बसाइओ।।

छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ।। (प ष्ठ ७१५)

इसने जो पदार्थ छोड़कर जाना था, उनके साथ चित्त लगा लिया, नाम के साथ मन को नहीं जोड़ा। यदि नाम के साथ मन लगाता तो परमेश्वर प्रसन्न होकर बड़ी कृपा करता। इसलिए इसका भाई ! गुरू परमेश्वर रक्षक है। इसको नाम प्राप्त हुआ है, उस नाम को जप-जप कर इसका जीवन सुमार्ग पर आना है।

भउ कतहि नही प्रभ सरणा।।

जब परमेश्वर की शरण पड़ जाये, फिर कोई भय नहीं। फिर इसको भय नहीं है।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।। (गीता १८/६६)

कोई चिंता मत कर, परमेश्वर के शरणागत होने पर कोई भय नहीं रहता।

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै

इहु बिरदु सुआमी संदा।। (प ष्ठ ५४४)

जो परमेश्वर की शरण पड़कर परमेश्वर का नाम जपता है, वह परमेश्वर उसको स्वंय ही संभाल लेता है। आप ही उसकी रक्षा करता है। वह अंतर्यामी है।

राखा एकु हमारा सुआमी।।

सगल घटा का अंतरजामी।। (प ष्ठ ११३६)

वह जो सब के हृदयों में है।

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।

कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।। (प ष्ठ १४२७)

यदि आपने संसार से पार होना है, परमेश्वर को प्रसन्न करना है, वह सब के हृदयों में जो परमेश्वर है, उसका नाम जपा कर, वह सब का रक्षक है। भाई कन्हैया ने हिन्दूओं, सिक्खों, मुसलमानों को युद्ध में जल पिलाया, वह पास हो गया। श्री गुरू दशम् पातशाह महाराज ने उस पर ऐसी कृपा की, उसके समस्त पाप कट गये, शुद्ध हो गया। उसको यह वरदान मिल गया, तेरा एक पंथ चलेगा। वह पंथ यह जो कहते हैं सेवा गुरूद्वारों की, यह सब सेवा पंथी हैं। यह पंथ उस भाई कन्हैया का है। उस पर कृपा हो गई। इसलिये, इसको परमेश्वर का नाम जपना चाहिये और परमेश्वर को मानना चाहिए।

गुरू परमेसरु एको जाणु।।

जो तिसु भावै सो परवाणु।। (प ष्ठ ८६४)

गुरू और परमेश्वर एक होते हैं, ये दो नहीं होते। ब्रह्मज्ञानी गुरू और परमेश्वर ये दोनों एक होते हैं। उनकी सेवा करने से समस्त कार्य सिद्ध हो जाते हैं। भाई कन्हैया पास हो गया। उसके इतिहास में बात आती है एक। भई गुरू

साहिब के पास एक शिकायत गई, भई यह तो महाराज, शत्रुओं को भी पानी पिलाता रहता है, यह तो कोई भेदी है। यह तो कोई ऐसा व्यक्ति है जो दोनों ओर मिला हुआ है। वे गुरू साहिब के पास आये। गुरू साहिब ने कहा भाई कन्हैया को बुलाओ। उसको बुलाया। उन्होंने शिकायत की। गुरू साहिब कहते - एक पानी का गड़वा (बर्तन) लाओ वह लाये। कहते इसमें एक पत्थर डाल दो, एक पताशा डाल दो, डाल दिया। हिलाओ इसको हिलाया। हिलाया कहते- निकालो। वह पत्थर निकल आया। वह पताशा पानी के साथ घुलकर उसके साथ एक हो गया। गुरू साहिब कहते, पताशा भी निकालो, कहते पताशा तो महाराज पानी के साथ एक हो गया। दशम् पातशाह कहते, यह हमारे साथ एक हो चुका है और तुम तीस-तीस वर्षों से सेवा करते हो, सब पत्थर के पत्थर। उन सब के भीतर से चिंगारियां निकली आग की। कहते तुम्हारे भीतर तो तृष्णा रूपी आग है, तुम्हारे भीतर तो वे अवगुण हैं। इसलिये वह पास हो गया। यह शरण पड़ गया, शरण पड़कर इसने नाम जपा, सेवा की। पहले दो काम इसके आवश्यक हैं - सेवा और सुमिरन। दोनों ही **'स'** हैं। इन दोनों 'स' से पहले इसने पकड़ने हैं। सेवा निष्काम करनी है और -

सेवा करत होइ निहकामी।।

तिसु कउ होत परापति सुआमी।। (पृष्ठ २८६)

कामना नहीं करनी, वह परमेश्वर अन्तर्यामी है, सर्वज्ञ है। वह तो सब जानता है, अन्तर्यामी है, और सेवा करनी है और नाम का सुमिरन करना है। नाम के सुमिरन में एक बड़ी शक्ति है। यह पहले काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि के साथ बाहर द्वैत में उलझता है फिर यह मनोराज्य करता है। यदि सुमिरन आपका हो गया, एक दम हो जायेगा एक रस। वह समस्त द्वैत आपकी दूर हो जायेगी, आपका मार्ग साफ हो जायेगा। फिर आप परमेश्वर से मिल जाओगे। ये दो कार्य पहले करने हैं, सुमिरन एवं सेवा निष्काम।

सेवा करत होइ निहकामी।। (पृष्ठ २८६)

निष्काम सेवा करे।

तिसु कउ होत परापति सुआमी।।

उसको स्वामी प्राप्त होता है। भई मंझ आदि जिन्हों ने भी सेवा की, वे पास हो गये और भाई बहिलो ने सेवा की तो गुरू स्वामी ने कहा -

"भाई बहिलो सब से पहिलो"

आ गया ? मांग क्या मांगता है ? वह कहता, जी आपने तो बड़ी कृपा कर दी, मुझे आत्मा की प्राप्ति हो गई। आपकी दया हुई है, आपने मेरे पर बड़ा उपकार किया। और भी कुछ मांग। उसने कहा - और हमारे यहां पानी का अभाव है। उन्होंने कहा फलां टोबा में एक ईंट उठा देना जाकर शिला। उसने उठा दी, वह अब तालाब बना है। बड़ा पानी ही पानी, जल ही जल हो गया। लोगों ने उसका बड़ा उपकार माना, भई तुम ने बड़ा काम किया, हमें जल दे दिया। वह कहता जल भी परमेश्वर ने दिया, मेरे पर कृपा भी परमेश्वर ने की है, मेरी मोक्ष भी परमेश्वर ने की है, लेकिन तुम्हे पता नहीं है परमेश्वर बड़ा दयालु और कृपालु है। इसलिये परमेश्वर की सेवा करो निष्काम, भई यह सब परमेश्वर की सृष्टि है और सेवा निष्काम करो। और तुम देखते नहीं हो ? वे बनाते है एक गुरूद्वारा और दे जाते हैं अकालियों को, वे आप तो नहीं रहते बनाने के बाद। इसलिये सेवा और सुमिरन निष्काम करो। कभी नाम को छोड़ो नहीं। ये दो कार्य आपको परमेश्वर के साथ मिलाप करा देंगे। सुमिरन आपका मार्ग साफ कर देगा।

सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।

नानक जीअ का इहै अधार।। (पृष्ठ २९५)

जब तक आपका सुमिरन नहीं चला, आपका कुछ भी नहीं बन। यह तुम अब अपने आप सोच लो। क्यों ? आपके भीतर मनोराज्य होता है। तुम देखो मन कई तरह करता है मनोराज्य ? आप बातें करता जाता है कि नहीं ? और वह फिर जब तक मनोराज्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार आदि नहीं निवृत्त होंगे, वह द्वेष तो आपके जिम्मा पड़ी रही। आप तो द्वेष में फंसे रहे। वह द्वैत तो सुमिरन ने साफ करनी है।

खोजत खोज ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण।।

अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण।। (प ष्ठ ७१४)

यदि तुम परमेश्वर से अपना सुख की कामना करते हो, अपना सब कुछ चाहते हो, तुम सदा परमेश्वर का सुमिरन करते रहना।

अजामल पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा।। (प ष्ठ ६३२)

अजामल पापी था, समस्त संसार जानता था, लेकिन वे संत नाम बता गये थे, उसने नहीं छोड़ा। वह नाम जपता था। उसको **'नाराइण'** नाम देकर गया था। वहां लिखा हुआ है। **'नाराइण'** नाम है जो नरों का स्वामी हो, परमेश्वर, मालिक का नाम देकर गया था। उसका जब देहांत हुआ वे रामगण भी आ गये और भयगण भी आ गये। वह यमों ने कहा, यह तो पापी है, तुम क्यों आये ? वे कहते, कहता क्या है ? कहता - बोलता है **'नाराइण', नाराइण, नाराइण**। कहता फिर कभी नाम जपने वाला भी पापी होता है।

कउन को कलंकु रहिओ राम नामु लेत ही।।

पतित पवित भए रामु कहत ही।। (प ष्ठ ७१८)

राम जपने वाले पापी बाल्मीकि आदि पवित्र हो गये।

काहे न बालमीकहि देख।। (प ष्ठ ११२४)

इसलिये बाल्मीकि की ओर क्यों नहीं देखता ?

किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख।।

वह कहता -

रे चित चेति चेत अचेत।। (प ष्ठ ११२४)

उस चेतन परमेश्वर का चिंतन कर, हे अचेत भूले हुये मन और फिर क्या है ?

काहे न बालमीकहि देखि।। (प ष्ठ ११२४)

तुम बाल्मीकि की ओर क्यों नहीं देखते, कितना दस्यु पापी था।

किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ। (प ष्ठ ११२४)

कौन सी उसकी जाति थी और किस पदवी पर वह पहुंच गया। वह महाऋषि हुआ है। भील था जाति का, वह महाऋषि हुआ है, उसके एक ग्रास खाने से, वह सारा यज्ञ सम्पूर्ण हो गया उनका। इसलिये -

काहे ना बालमीकहि देखि।। (प ष्ठ ११२४)

किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख।।

यह राम भक्ति में शक्ति है, परमेश्वर की भक्ति में शक्ति है, यह समस्त कार्य कर देती है। यह नाम नहीं जपता, निष्काम सेवा नहीं करता, इसलिये इसकी सड़क साफ नहीं होती है। यह मनोराज्य काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि यही काम करता जाता है, साथ में नाम भी जपता रहता है। यह तो मिलावट सी हो गई, कभी इधर तो कभी उधर। उसका काम ठीक नहीं होता। क्यों ?

दुबिधा में दोनों गए, ना माइआ मिली ना राम।

द्वैत में दोनों जायेंगे, न तुझे माया मिले न राम मिले। तुम एक ओर होकर उस नाम को जप, वह नाम तुम्हारे समस्त कार्य सिद्ध करेगा।

रहाउ।।

'रहाउ' रागियों के लिए होता है। पहली पंक्ति दोबारा कहनी है। इसमें रहस्य होता है, सारे शब्द का।

तेरिआ दासा रिदै मुरारी।।

तुम्हारे दासों में जो **'मुरदैत'** को मारने वाला **'मुरारी'** सगुण और जो अहंकार को मारने वाला निर्गुण, वह तुम्हारे दासों के हृदयों में प्रकट होता है। यह **'घट घट मै हरि जू'** बसा हुआ होता है। वह प्रकट साक्षात होता है, वह परमेश्वर।

प्रभि अबिचल नींव उसारी।।

यह **'अबिचल नीव'** है। यह कभी जायेगी नहीं। यह पक्की नींव है, इसलिये भाई! यह पक्की नींव है कि परमेश्वर का नाम कभी छोड़ना नहीं।

ऊठत बैठत सोवत नाम।।

कहु नानक जन कै सद काम।। (प ष्ठ २८६)

यह नहीं भूलना, संसार में व्यवहार करते हुये।

साचि नामि मेरा मनु लागा।।

लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा।। (पृष्ठ ३८४)

नाम नहीं छोड़ना, संसार में और बाहर नहीं फंसना है। नाम के साथ पूर्ण दिल लगाकर रखना, और बातचीत व्यवहार में **'ठाठा बागा'** रखना। वास्तविक नाम नहीं कभी छोड़ना। परमेश्वर को भूलना नहीं कभी।

बलु धनु तकीआ तेरा।।

समस्त बल एवं धन **'तकीआ'** अर्थात् आसरा, यह आसरा तेरा है, परमेश्वर ! तुम्हारे बिना मेरा अन्य कोई नहीं है।

तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु।। (पृष्ठ ४६८)

तुम्हारे बिना, सब झूठ है। तुम ही परमेश्वर मेरा आसरा हो, तुम ही मेरे स्वामी हो, तुम ही बल प्रदान करने वाला, तुम ही मेरे रक्षक हो। हे परमेश्वर !

तू भारो ठाकुर मेरा।।

तुम सब से बड़े 'ठाकुर' हो मेरे। बाहर से भी **'ठाकुर'** लोगों ने गले में डाल रखे होते हैं। एक दिन आया था हमारे पास भी, उसने बड़ी नमस्कारें की। वे ठाकुर चांदी का बनाकर डाल लेते हैं, उसको भोग लगवा कर खाते हैं और पानी पीते हैं हर समय। वह गुरू अर्जुन देव जी के पास भी ठाकुर का उपासक आया, साथ में उसके कोई और था। उन्होंने कहा जी यह ठाकुर का उपासक है। इसके गले में जो ठाकुर है उसको भोग लगाये बिना, कभी नहीं खाता। गुरू साहिब ने कहा- ना

घर महि ठाकुरु नदरि न आवै।।
गल महि पाहुण लै लटकावै।।
भरमे भूला साकतु फिरता।।
नीरू बिरोलै खपि खपि मरता।। रहाउ।।
जिस पाहण कउ ठाकरु कहता।
ओह पाहणु लै उस कउ डुबता।।
गुनहगार लूण हरामी।।
पाहण नाव न पारगिरामी।।
गुर मिलि नानक ठाकुरु जाता।
जलि थलि महीअलि पूरन विधाता।। (पृष्ठ ७३६)

वह हमारा **'ठाकुर'** तो सर्वत्र-परिपूर्ण है। यह तो भ्रम में पड़ा हुआ है। यह तो पत्थर है, पत्थर की नांव पर आज तक कोई पार नहीं हुआ। मूर्ति पूजा से किसी की कभी मोक्ष नहीं हुई। वास्तविक बात तो यह है जो मूर्ति पूजक हैं उनको यह बात लगेगी तो बुरी, लेकिन है गुरू साहिब की सच्ची। आज तक मूर्ति पूजा, भगवान् ने नहीं कलहवाया। वे अधिक से अधिक धन्ने का दृष्टांत देंगे। धन्ना तो, उसके शब्द पढ़कर देखो, वह तो कहता परिपूर्ण है सब में, वह तो सब की पालना करने वाला है। वह तो इस ठाकुर को धन्ना तो अपने शब्दों में कहता है। लेकिन लोगों ने एक उदाहरण ले लिया है, वह धन्ना को तो साक्षात् परमेश्वर प्रकट था। पूर्व जन्मों में उसने अर्जित किया था, इस जन्म में उसे यह फल होना था। उससे अलग परमेश्वर है नहीं था।

जिनि जिनि साधसंगु पाइआ।।

जिन्होंने भी साधुओं की संगति की, महापुरूषों, परमेश्वर के प्यारों की।

सो प्रभि आपि तराइआ।।

परमेश्वर ने उसको स्वयं तार दिया। उसका जिम्मेवार परमेश्वर स्वयं हो गया जिसने संतों की संगति की।

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा।।
नामु प्रभू का लागा मीठा।। (पृष्ठ २६३)

पंचम पातशाह कहते, संत गुरू रामदास जी के साथ मिलकर हमने परमेश्वर अपने अन्दर देखा, हमें कोई शंका नहीं रही है। लेकिन संत का मिलाप किसको होता है ?

पुन्य पुंज बिनु मिलहि न संता।

सत संगति संसृति कर अंता।। (मानस ७.४५)

जब उसने निष्काम पुण्यों के समूह फल देने के लिए सम्मुख होते हैं तब इसको संत का मिलाप होता है। लेकिन वह होता है प्रभु की कृपा से, इसको नहीं पता होता। वह प्रभु की कृपा से होता है, वह फिर परमेश्वर के साथ मिल जाता है।

प्रेम भगति उधरहि से नानक
करि किरपा संतु आपि करिओ है।। (प ष्ठ १३८८)

संत को तो परमेश्वर बनाता है। ब्रह्मज्ञानी भी परमेश्वर ही बनाता है।

ब्रहम गिआनी से जन भए।।
नानक जिन प्रभु आपि करेइ।। (प ष्ठ २७२)

वह परमेश्वर स्वामी है **'ब्रहमगिआनी'** बनाने का, संत बनाने का। इसका एक ही काम है, इसने निष्काम सेवा और सुमिरन नहीं कभी छोड़ना। आठों याम, यह इसका काम है जीव का। वह परमेश्वर स्वयं इसका ध्यान रखेगा। बिना परमेश्वर के अन्य किसी का नाम नहीं जपना और न किसी पर विश्वास लाना और गुरू का इतना परोपकार है, उसने हमें नाम बताया, सीधे मार्ग पर डाला। इसलिये वह भी हमारा पूजनीय है और उससे भी कुर्बान जाना चाहिये, पंचम पातशाह कहते।

सो प्रभि आपि तराइआ।।

वह पुरूष, प्रभु ने स्वयं पार लगाया जो ऐसा पुरूष था, प्रभु पर भरोसा करने वाला, सुमिरन करने वाला, सेवा करने वाला और शरणागत हो गया था। वह परमेश्वर ने स्वयं पार किया।

करि किरपा नाम रसु दीआ।।

बड़ी कृपा की परमेश्वर ने, हमें वह नाम का रस दे दिया, हम नाम जपने लग गये। वह हमारा मन, नाम के साथ जुड़ गया और तब हमें रस आने लग गया, यह तो बड़ी ऊंची अवस्था है। जब उसके नाम का रस आ जाये तो अन्य रस फिर इसको फीके लगेंगे, अन्य कोई रस इसको अच्छा नहीं लगेगा।

कुसल खेम सभ थीआ।।

कहते सारा ही **'कुसल खेम'** हो गया, आनन्द ही आनन्द हो गया, अब दुःख तो कोई रहा नहीं। दुःख तो मन की ही उपज था, अन्य तो नहीं कोई दुःख होता यह मन ने ही दुख सुख बनाये हैं, यह आत्मा ने तो दुःख सुख नहीं बनाये। चेतन तो दुःख सुख नहीं देता होता। वह तो -

सुख दुख रहत सदा निरलेपी जा कउ कहत गुसाई।।
सो तुम ही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई।। (प ष्ठ ६३२)

वह तो ऐसा है परमेश्वर। यह तो इसने कल्पना की है, दुःख सुख। यह मेरे गोत्र हैं, यह मेरी जाति है, ये मेरे सम्बन्धी हैं, ये मेरे शत्रु हैं, ये मेरे मित्र हैं, यह तो आपने मन में कल्पना की है। जैसे कर्म किये, वैसा इसके मन में अंकुर पड़ गया। वह अंकुर अब इससे निकलते नहीं हैं। यह बात है कुसंगति में यह बढ़ता जाता है। जब इसको **'सति पुरख'** का संग मिल जायेगा, फिर यह नाम को लेकर सुखी हो जायेगा। फिर परमेश्वर ने इसको नाम का रस स्वयं ही प्रदान करना है, इसके परिश्रम के अनुसार। जब यह उसका दास बन जायेगा, उसकी शरण पड़ जायेगा, इसको नाम रस आ जायेगा।

होए प्रभू सहाई।।

परमेश्वर ने आकर सहायता की। अजीता रंधावा बैल हांकता, वह गाधड़ (बैठने का स्थान) के ऊपर बैठता थे, जब रहँट हांकते होते थे। वह बैठा था और मिट्टी की टिण्डा (छोटे छोटे घड़े) होती थीं तब। और गुरू नानक को जब पता लगा, इसके पूर्वजन्म का मेरे साथ सम्बन्ध है, यह इसका कार्य करना है। वे पीछे मुड़े। उसने कहा - हाँ ? यह तो उन खत्रियों का महमान दामाद है और स्नान करने आया है। वह गुरू साहिब ने उस पर ऐसी कृपा की तो उसे वह वस्तु प्राप्त हुई, नाम दे दिया, नाम का रस आ गया। वह चरणों पर गिर पड़ा। कहता - मैं तो बहुत बुद्धिहीन था, मैं तो आपके आने पर खड़ा भी न हुआ, मैंने तो आपका सत्कार भी नहीं किया। वे कहते - अजीते ! तुझे पता नहीं, वह समय आ गया था, पूर्वजन्म का। वह तेरा समय आया था और हमने यह कार्य करना था। फिर वह अजीते ने बड़ी सेवा की, अजीता रंधावा ने और बहुत सेवा की, लोगों ने कहा,

बई तुम तो बड़े भटके हुये हो। उसने तो गुरूनानक के जो सास ससुर थे बिगड़े हुए उनको भी कहा, ओये ! शरण पड़ जाओ, वे भी शरणागत हुये। इसलिये, जब समय आता है पूर्व जन्मों का, पुण्यों का, तो इसको संत मिल जाता हैं और जब संत का मेल हो जाये, इसको नाम-दीक्षा मिल जाती है। नाम की प्राप्ति होने से, इसका मन नाम के साथ जुड़ जाता है, इसको आनन्द आ जाता है और 'बाबे बुड्ढ़े' को जाते ही क्यों ऐसा हो गया ? अजीते रंघावे को जाते ऐसा क्यों हो गया? उस अजीते को तो यह भी नहीं था पता, भई यह कौन है वह तो अपने आपको बड़ा समझता था कि मैं बड़ा जमीदार हूँ और यह दामाद है खत्रियों का, स्नान करने आया है और पीछे उसके गुरूनानक आते हैं चलते। वह रहँट हांकता था, वह खड़ा नहीं हुआ और न कुछ उसने कहा और क्यों ? उसका पूर्व पुण्य उदित हो गया था। उस पुण्य को प्रकट करने के लिए गुरू नानक ने उसको वस्तु प्रदान कर दी, उसका उद्धार हो गया।

सभ उठि लागी पाई।।

सब परमेश्वर के चरणों से जुड़ गये। सब परमेश्वर पर विश्वास करने लगे, परमेश्वर के दास हो गये।

सासि सासि प्रभु धिआईऐ।।

भाई ! एक बात तुम स्मरण रखना, *'सासि सासि प्रभु धिआईऐ।'* कभी परमेश्वर को भूलना नहीं, किसी श्वास के साथ। संसार का समस्त कार्य करना, परमेश्वर को नहीं भूलना। कोई श्वास आपका व्यर्थ न जाये जो नाम के बिना निकल गया, वह व्यर्थ है श्वास। वह नाम के बिना कोई श्वास आपका व्यर्थ न जाये। नाम का सुमिरन करना, नाम नहीं कभी छोड़ना और परमेश्वर के सम्मुख जाकर शरण पड़ना। भई परमेश्वर तुम्हारे हैं, अन्य किसी के नहीं।

हरि मंगलु नानक गाईऐ।।

कहते, हरि के मंगल हो जायेंगे, फिर मंगल गायन करना, गुरू नानक देव कहते। हरि का मंगल यही है, जो श्वास श्वास नाम जपोगे। आपके समस्त कार्य मंगल (सिद्ध) हो जायेंगे। यह कर्तव्य भई आपने करना। यह शिक्षा गुरू अर्जुन देव जी ने दी है। भई जीव को ऐसे करना चाहिए।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू। ❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

१३

सोरठि महला ५।।

अबिनासी जीअन को दाता सिमरत सभ मलु खोई।।
गुण निधान भगतन कउ बरतनि बिरला पावै कोई।। १।।
मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई।।
जा की सरणि पइआं सुखु पाईऐ बाहुडि दूखु न होई।।रहाउ।।
वडभागी साधसंगु परापति तिन भेटत दुरमति खोई।।
तिनकी धूरि नानकु दासु बाछै जिन हरि नामु रिदै परोई।। २।।

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु ! सतिनाम श्री वाहिगुरु !!

इसको अपने जैसी कोई वस्तु मिली नहीं। पहली बात तो यह आप को 'मन' मानता है। मन के धर्म को लेकर जीव बन गया, फिर इसको जीव कहने लगा। जीव तो वह होता है, जो उत्पत्ति, नाश और पालने वाला हो। जीव तो वह होता है जिसको तृष्णा भी हो, जो किसी के आगे जाकर प्रार्थना भी करे, जीव तो वह होता है और अविनाशी किसी के आगे जाकर प्रार्थना नहीं करता। अविनाशी की कोई मांग नहीं होती। वह तो 'सोई प्रकाश' 'सुते सिध' होता है और नित्य होता है और जीव भी कोई वस्तु है, जिनका वह दाता है, जिसकी उत्पत्ति, पालना, लय करता है, उसको जीव कहते हैं और वह जीवों का दाता है।

राखा एकु हमारा सुआमी।।
सगल घटा का अंतरजामी।। (प ष्ठ ११३६)

फिर वह अंतरयामी भी है। यदि वह अंतरयामी न होता तो दाता कैसे बनता? वह 'जीअन के दाता' तो सर्व जीवों का दाता है, यह एक का दाता तो है

नहीं। जो वह अंतरयामी है, सब के हृदयों में बैठकर, सब की बुद्धि, मन का ज्ञान करता है और सब की भूख प्यास को जानता है। हां वह अविनाशी दाता है, वह जो सब की उत्पत्ति, पालन, लय करता है, वह है अविनाशी। उसमें तुम कभी शंका न करना, भई वह भी कोई नाश वाला है अथवा किसी धर्म वाला है अथवा उत्पत्ति, नाश वाला है। उसमें अविनाशी में कोई वस्तु नहीं। जीव उससे अलग हैं, जो उसके सम्मुख प्रार्थना करते हैं। जो मांगते हैं, जिनके अन्दर कोई इच्छा है, जिनके अन्दर कोई तृष्णा है, आशा है, जिनके अन्दर कामनायें हैं, अब आप यह बताओ ? भई ये तुम्हारी कामनायें, तृष्णायें, इच्छायें, आशायें ये भी कहीं आश्रित होंगी ? यह तो तुम अपने अनुभव के साथ देखो भई तुम्हारे अन्दर कोई ऐसी वस्तु भी है जिसके अन्दर तृष्णा भी है और आशा भी है ? आशा तो वृत्ति है, तृष्णा भी वृत्ति है, ये सब वृत्तियां हैं। विचार कहो, वृतियां कहो, परतें कहो, ये तो पर्यायवाची शब्द हैं भिन्न भिन्न भाषा शास्त्रियों के। फारसी वाले ख्याल लिखेंगे और पंजाबी वाले संकल्प लिखेंगे और संस्कृत वाले परते लिखेंगे, वृत्तिया लिखेंगे और प्रत्यक्ष तो कल्पि से अलग होता है। आपके अन्दर प्रत्यक्ष भी तो है। परतें नाम है वृत्तियों का, ख्यालों का, संकल्पों का और कोई प्रत्यक्ष भी तो है जो भीतर बैठा, आपकी समस्त वृत्तियों, ख्यालों को देखता है, वह भी तो कोई होगा। वह अविनाशी है, उसको अविनाशी कहते हैं, उसको द्रष्टा कहते हैं, उसको साक्षी कहते हैं, कोई कोई उसको नितस्वरूप भी कहते हैं। वह क्यों ? आपका आपा निजरूप ही है। इसलिये अब आप दो वस्तुओं की यहां बांट कर के चलना, तो यह शब्द आपके मस्तिष्क में बैठेगा।

अबिनासी जीअन को दाता

अब एक तो अविनाशी है, जीवों का दाता और एक चार प्रकार के प्राणियों के जीव हैं और एक ही हृदय में हैं, ये बाहर तो नहीं हैं। जहां अविनाशी प्रत्यक्ष हृदय में बैठा है, साक्षी होकर बैठा है, द्रष्टा होकर बैठा है, वहां परतें भी तो होगी, ख्याल भी होंगे, संकल्प भी होंगे। इन संकल्पों का जिम्मेवार भी कोई होगा, जिसको इस में प्रच्छिन्न अहंकार होगा। मैंने यह संकल्प किया था गुरू ग्रन्थ साहिब के सम्मुख अरदास की थी, मेरा कार्य पूर्ण हो गया। परसों मुझे एक व्यक्ति कहता - वह काम जी पूर्ण हो गया। कोई बात उसने कही हुई थी, वह उसको लगा हुआ था। ईश्वर ने उसका काम पूरा कर दिया, हमें स्वप्न में भी नहीं पता, भई कब उसका काम पूर्ण हो गया। इसलिये कोई है ईश्वर, है, नियंता, है परमेश्वर। वह सत्य है, अविनाशी है, नित्य है। उसको नित्य सत्ता कहते हैं। अंतर में जाकर जब ग्रन्थकार आगे चले जाते हैं वे समस्त छोड़ते छोड़ते फिर एक वस्तु रह जाती है वह है 'सोऽहम्' सत्ता। वह नित्य सत्ता है इसके आगे कोई भी शब्द नहीं मिलता। यह हमनें संतों के साथ विचार किया, विरक्तों में बैठकर। उन्होंने अंत में यही निर्णय दिया भई यह नित्य सत्ता है। इसके सम्बन्ध में हम कुछ कह नहीं सकते। सत्य भी तो असत्य की अपेक्षा में कहा जाता है समझाने के लिए, नित्य भी तो अनित्य की अपेक्षा से ही कहा जाता है। इसलिये जब वहां वृत्ति उसकी लीन हो जायेगी, क्या कहेगा ? एकाग्रता तक पूर्व संस्कार रहेंगे लेकिन निरूद्ध वृत्ति में तो संस्कार रहते नहीं। निरूद्ध अवस्था तो पांचवी है कि नहीं ? निरूद्ध अवस्था में तो बिना चेतन के कोई वस्तु ही नहीं होती। इसी को लोग समाधि कहते हैं। इसको निर्विकल्प मुद्रा भी कहते हैं। यह भिन्न-भिन्न बातें हैं। वह वास्तविक बात है। वह निहंकार, जीवों का दाता भी है। यदि जीवों का दाता न होता, फिर संसार काल में होता ही नहीं। यह बताया नहीं ?

अबिनासी जीअन को दाता

वह **'अविनासी'** इसका आत्मा है। **'अविनासी'** नाम ही आत्मा का है। वह इसका अपना आप है जीव का। लेकिन इसको भ्रम हो गया, भई यह जो मांग वाली वृत्ति है, शायद इस का ठेकेदार मैं हूँ। लेकिन यह ठेकेदार (स्वामी) तो नहीं है। वह अविनाशी अन्तर्यामी है, वह अविनाशी जीवों का दाता है। अच्छा ! फिर दो वस्तुयें कभी नित्य हो नहीं सकतीं, यह भी तुम विचार कर देख लो। लेकिन गुरू साहिब एका लिख गये। एका लिखा गुरू साहिब ने और फिर अर्थ भी साथ लिख दिये।

साहिबु मेरा एको है।। एको है भाई एको है।। (पृष्ठ ३५०)

प्रतिज्ञा कर दी, मेरा परमेश्वर एक है। गुरू नानक कहते अन्य मेरा कोई परमेश्वर नहीं। एक है तो -

एकम एकंकारू निराला।।
अमरू अजोनी जाति न जाला।।
अगम अगोचरू रूपु न रेखिआ।। (प ष्ठ ८३८)

ऐसा है, यह इसके विशेषण हैं, कुछ हैं। कहते जी रहता कहां है ? कहते-

खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।।

और सब के हृदयों में भी अविनाशी बैठा है, हमने खोज कर देखा है, वह सब के हृदयों में है, सब का आत्म रूप है। 'आतमा' नाम है अपने आपका। यदि अपना आप न हो, इसको जड़ का ज्ञान न हो। परतें समस्त जड़ हैं, विचार सब जड़ हैं, वृत्तियां सब जड़ हैं, इसकी सत्ता स्फूर्ति के साथ परिचालित हैं। जड़, अपने आप तो कभी चला नहीं। गाड़ी आपने कभी अपने आप चलती नहीं देखी होगी, चाहते विद्युत पर चलायें, कुछ करें, परिचालित करने वाला कोई परम्परा चेतन ही होगा। मोटर कभी अपने आप नहीं चलती। कोई पुर्जे आप बनाते हो, अपने आप तो कभी बने नहीं। पांच तत्व कभी अपने आप नहीं बने और जिस दिन भी सृष्टि बनी है, छठा तत्व आज तक किसी से नहीं बना। यदि कोई अन्य कर्ता पुरूष होता तो इन पांचों को बदलकर और बना देता। ये पांच तत्व बदले तो नहीं हैं ? तुम अपने शरीर में देख लो, यह हड्डियां पृथ्वी हैं, यह जो रक्त है जल है, इसके आगे अग्नि आयेगी, यह आपका सब कुछ हज़म करती है। यह वायु आपके सम्मुख चलती है, यह पांच प्रकार की है। आगे आकाश है, खाली स्थान और छठा तो वह स्वयं ही है।

पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान।।
जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु।। (प ष्ठ १४२७)

वह और भी कोई है।

घटि घटि मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।। (प ष्ठ १४२७)

छठा भी कोई नियंता अंदर बैठा है, सृष्टि को परिचालित करने वाला। आपके भीतर भी है। यह नहीं भई बाहर है। वह आत्मा है, वह अपना आप है। वह जो आपका अपना आप है, वह व्यापक नहीं है ? फिर व्यापक की पहचान क्यों न हो। आत्मा को ब्रह्म पहचानने में एक ही वस्तु रूकावट है - माया। माया के विचारों में, इसकी वृत्ति फंस गई। वह वृत्ति अविनाशी के सम्मुख नहीं, वह यहां तक पहुंच चुकी ? इसकी वृत्ति को तो इतना भी समय नहीं मिलता। वह कभी सुषुप्ति में भी कठिनाई से जाता है। कई लोगों को तो नींद भी नहीं आती, गोलियां खाते हैं। वे क्यों खाते हैं ? उनके मन को इतना भी समय नहीं मिलता आराम करने का। इतने विचार उन्होंने अपने अन्दर भर लिए हैं और यह भी विचार इसके मन को छोड़ते नहीं। पहले भाई ! अपने विचार सीमित करो, अत्यंत माया के। फिर अब इसकी ओर ऐसे जाओ, भई यह तो अविनाशी है, यह तो आत्मा है।

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई।।
एको अम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई।। (प ष्ठ ४२१)

यह वेणी जी लिखते हैं-

जिनि आतम ततु न चीनिआ।।
सभ फोकट धरम अबीनिआ।। (प ष्ठ १३५१)

यह बेणी जी लिखते हैं। कहते जिन्होंने आत्म तत्व को नहीं पहचाना, अपने आपको नहीं जाना।

सभ फोकट धरम अबीनिआ।।

उन्होंने व्यर्थ में धर्मों में जीवन नष्ट कर लिया।

कहु बेनी गुरमुखि धिआवै।।
बिनु सतिगुर बाट न पावै।। (प ष्ठ १३५१)

बेनी कहता, उसका ध्यान करो। जी करते हैं। कहता - बिना सत्गुरू के मार्ग नहीं मिलना, मार्ग नहीं मिलना, चाहे तुम आजीवन खोज करते रहो। यह

तृष्णा, आशा के साथ जुड़ा रहता है और अविनाशी का इसको साक्षात नहीं होता। निरूद्ध अवस्था में नहीं होता, पूर्ण समाधि अवस्था में नहीं होता। इस विचार के सम्बन्ध में दो वर्ष विरक्तों में विवाद होता रहा। कुछ संत बुद्धिमान कहते भई पक्का ज्ञान समाधि से होता है, दूसरे कहते - नहीं विचार से होता है। अब ग्रन्थों में वेदांत में विचार से भी ज्ञान लिखा हुआ है और वशिष्ठ ने तो स्पष्ट ही कह दिया बड़े वेदांती ने भई, जीव प्रयत्न तेरा देव है। यदि तुम बिना प्रयत्न के चाहो, भई मेरी समाधि हो जाये, मुझे ज्ञान हो जाये, गलत है। तेरा पुरूष प्रयत्न ही तुम्हारा देव है। पुरूष प्रयत्न नाम है, भई नाम को लेकर उसका इतना अभ्यास करना और साथ में विचार करना। अब विचार पर निर्णय यह हुआ जो हमने श्रवण किया है, भई जो योग-भ्रष्ट हैं, पहले करते आये हैं, साधन उनके पूर्ण हो चुके हैं। क्षण मात्र उनका रहता था, जैसे कबीर आदि का, उनको विचार से ज्ञान हो गया। उनका शेष तो सब जीता हुआ था। वे तो अभ्यास करते आये, थोडा सा शेष था। अभी इतना कुछ हुआ है, विचार स्वयं ही उत्पन्न हो जायेंगे। जब महापुरूष से भेंट हुई, विचार हुई, उसको स्वरूप का ज्ञान हो गया। लेकिन जो पहले ही अभी साधन करने लगा ही है, उसको विचार से ज्ञान कैसे होगा ? उसको तो यात्रा करनी पड़ेगी, उसको तो अभ्यास करना पड़ेगा। वृत्ति ने शुद्ध तो अभ्यास से होना है। यदि यह न होता तो ऐसा क्यों लिखते वेदांत वाले ?

सुनण, मनण, निदिआसन।

निदियासन की परिपक्व अवस्था का नाम समाधि है।

सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ।।

अंतरगति तीरथि मलि नाउ।। (प॰ ४)

अंतर प्राप्त तीर्थ और वृत्ति जब पूर्ण एकाग्र हो जायेगी, वृत्ति का समस्त मलिनता धुल जायेगी, फिर इसने अपने आप वहां स्थिर हो जाना है। अब आप अपनी वृत्तियों की ओर देखो, भई आपकी वृत्तियां कहा को हैं ? प्रातः उठकर ब्रह्म मुहूर्त में, स्नानकर के सच्चे मन से बैठ जाओ, वह स्वयं ही आपकी वृत्तियों में आ जायेगा, जो आना है। इसलिये वह परमेश्वर का जो अभ्यास है, उसके बिना कोई कार्य सिद्ध नहीं होना, गीता इस बात की साक्षी है -

चंचलं कि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढ़म्।

तस्याहं बिग्रहं मन्ये वायोखि सुदुष्करम्।। (गीता ६/३४)

मैंने वायु की गठरी बांध ली, लेकिन मन मेरे वश में नहीं। भगवान् कृष्ण चन्द्र जी लिखते हैं -

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रह चलम्।

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृहचते।। (गीता ६/३५)

यह तो अभ्यास और वैराग्य से तुम्हारा कार्य सिद्ध हो जाना है। वैराग नाम है वे-राग। किसी वस्तु के साथ मोह न रहना। राग न रहना समस्त मिथ्या निश्चय हो जाना। फिर अभ्यास उस वस्तु का, सजाति परतियों का, पूर्ण प्रवाह चल पड़े जब, निज अवस्था में पहुंच गया। इसके लिए इस करके इसको कमाने की आवश्यकता है। यह आपमें पहले भी तो तुम्हारे अभ्यास के साथ संस्कार पड़े हैं। यदि संस्कारों का अपने आप ही पड़ने का स्वभाव होता, तो जो आपके संस्कार होते, वही मेरे होते, वही इनके होते। संस्कार एक तो है नहीं सब के, संस्कार तो अलग-अलग हैं। वे संस्कार भी लोगों के पास बैठकर, अभ्यास के साथ ही थोड़े बहुत आये हैं। कुछ स्वयं आये हैं, कुछ पूर्व जन्मों के, कुछ कुसंग से आ गये। सत्संग ने ही उनका नाश करना है। सत्संग ने ही आपको मार्ग बताना है।

बिनु सतिगुर बाट न पावै।। (प॰ १३५१)

ध्यान इसको पहले प्राप्त नहीं होना, ध्यान वैराग्य के बाद लगता है। यह ग्रन्थकारों का नियम है। आपका ध्यान तब स्थिर होगा जब राग न रहे, वे-राग हो जाओगे, तब ही मन वहां बैठेगा। ध्यान की परिपक्व अवस्था को ही समाधि कहते हैं। और क्या है ? इसलिये वह जीवों का दाता, अविनाशी है। अब तुम अपने अन्दर स्वयं देखो निर्णायक बनकर, भई क्या आपके अन्दर जीवपन का निश्चय है कि अविनाशीपन का निश्चय है ? यह तो तुम स्वयं देखो। यदि आपके

भीतर इच्छा है संसार की और विचार है संसार के तो तुम संसारी हो, अविनाशी कैसे हो जाओगे ? ज्ञानी कैसे हो जाओगे ? इसलिये आप ने स्वयं ही देखना है अपने मन को, आप ही तुमने साफ करना है।

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरू।। (प ष्ठ १३६७)

मन शुद्ध आपने अपना आप करना है, उसमें गुरू और परमेश्वर की कृपा की आवश्यकता है। परमेश्वर ने गुरू से मिलाप कराना है, गुरू ने आपको एक नाम के साथ जोड़ना है। नाम के साथ मन जोडना कि तोड़ना यह तो आपका पुरूष प्रयत्न है। जोड़ना पुरूष प्रयत्न है। तोड़ना, टूट जाना तो अभी संसार के संस्कार प्रबल हैं। इसलिये - ऐसा परमेश्वर है, अब पढ़ भई -

अबिनासी जीअन को दाता

अविनाशी, समस्त जीवों का दाता है। उत्पत्ति, पालना, लय करने वाला परमेश्वर नास से रहित है।

सिमरत सभ मलु खोई।।

कहते-जी हमारा जो मल संस्कारों का लगा हुआ है, सकायता का, यह कैसे दूर हो ? कहते - सुमिरन के साथ। सुमिरन तो दूसरी अवस्था है। पहले आपका 'नाम' दृढ़ करके जप, फिर सुमिरन, फिर धुन और फिर लिव अर्थात् लौ। अनाहत भी दूसरी में आ जाना है, एक रस आपका सुमिरन चल जाये। अनाहत किसी ऐसी वस्तु का नाम नहीं। यदि तुम यह अर्थ करो कि अनाहत, आहत से रहित चेतन आत्मा है फिर तुम्हें सुमिरन की क्या आवश्यकता है ? तुम तो हो ही पहले। वह तुम्हारे सुमिरन ने उस एक रस के साथ तुम्हें लिव अर्थात् लौ ने जोड़ना है और सुमिरन तो मन ने करना है, आत्मा ने तो नहीं करना। आत्मा को तो सुमिरन की आवश्यकता ही नहीं। कोई भी साधन किसी ग्रन्थकारों ने आत्मा के लिए तो नहीं लिखा हुआ। जहां द्रष्टा आया वहां जाकर साधन बंद हो गये। गुरू साहिब ने स्पष्ट लिखा है, पंडित था न जो षट् शास्त्री दार्शनिक और उसके पुत्र का देहान्त हो गया और वह शोक में डूब गया। गुरू साहिब कहते -

मूई सुरति बादु अहंकारू।।
ओहु न मूआ जो देखणहार।।
जै कारणि तटि तीरथ जाही।।
रतन पदारथ घट ही माही।।
पडि पड़ि पंडितु बादु बखाणै।।
भीतरि होदी वसतु न जाणै।। (प ष्ठ १५२)

पंडित कहता - जी आप मृत्यु को प्राप्त नहीं होंगे ? गुरू साहिब कहते -

हउ ना मूआ मेरी मुई बलाइ।।
ओहु न मूआ जो रहिआ सभाइ।।
कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ।।
मरता जाता नदरि न आइआ।। (प ष्ठ १५२)

अब दार्शनिक ने तो आगे वेद-ज्ञान में पहुंचना है।

एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतांतरात्मा

(श्वेताश्वतर उपनिषद् १७/७७)

वह वेद ने तो एक पर चलना है। 'एको देवा'। वह वेद में भी एका है। अब समस्त दार्शनिक पुराणों में आ गये। कहते, अभिज्ञ है, यह तू ने लिखा हुआ पढ़ा नहीं ? पहले साधु जो होते थे, वे ऐसे ही बोलते थे, वे पुराण से दार्शनिक में जाते थे, दार्शनिक से फिर वे व्यापक में जाते थे। वेद भी वास्तव में एक से जुड़े हैं। एक से वापिस फिर तुम कहां जाओगे भई ? एक से वापिस तुम क्या जीव में जाओगे ? लोगों को बतायेगा भई जीव है। इसलिये बात उसकी सच्ची है, यह बात मैंने भी उसको कही थे। क्यों ? कहता अभिज्ञ है। यह उठकर पहचान करने लग जाता है। संसार भ्रांत हो जाता है, भई यह बात शायद ठीक हो, मैं गलत हूँ, यह ठीक है। इसलिये भाई ! वह अविनाशी है, वह नाश रहित है लेकिन जीवन का दाता भी तो है और दाता होकर याचक तो नहीं हो गया। वह अविनाशी ही रहेगा-

ओहु अबिनासी बिनसत नाही।।

ना को आवै ना को जाही।। (प ष्ठ ७३६)

इधर को जाना, उसके विशेषण तो ये हैं। इसलिये, जीवों का दाता भी है। अब आप अपने भीतर देखो, आपके अन्दर संसार की इच्छा है कि नहीं ? यदि है तो फिर तुम यहां से चलो, जहां तुमने आत्म-विचार करना है। यदि अन्दर आपके संसार की मांग है, फिर तुम्हें समझ भी बहुत कम आयेगी। आयेगी तो अवश्य, लेकिन थोड़ी आयेगी। ये बातें व्याख्यानों की तो नहीं होतीं। आज मैं कहने लगा हूँ, मैंने कभी कहा नहीं है। प्रचारक को जहां से चलना चाहिये, ऐसे जाना चाहिए। गुरू नानक, पंडित के साथ पहले जीव से आरम्भ किया और फिर द्रष्टा में जाकर, व्यापक में गये। व्यापक में कहा -

हउ न मूआ मेरी मूई बलाइ।।
ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ।।
कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ।।
मरता जाता नदरि न आइआ।। (प ष्ठ १५२)

मेरे गुरू ने मुझे वह वस्तु दिखाई, गुरू नानक कहते। मेरा जो **'अकाल पुरख'** गुरू है ने मुझे वह वस्तु दी है, देकर भेजा है। द्रष्टा से आरम्भ करके व्यापक में ले गये। पंडित मोह में खड़ा था, यदि वह द्रष्टा में न जाता पंडित, व्यापक में, तो उसका मोह कैसे नष्ट होता ? वह शब्द वैसे तो नहीं कहा, गुरू साहिब ऐसे ही तो नहीं कहते होते। लेकिन हमें उनका पता नहीं लगता, भई यहां से चलें। वह पढ़ा लिखा बुद्धिमान, यह गंगा सिंह कहते होते थे।

जीव भी, चार प्रकार के प्राणी भी, इस पद में हैं और दाता अविनाशी भी है। अब आप अपने अन्दर देखो। आपके भीतर इच्छा तो नहीं कोई, यदि इच्छा है तो तुम जीव कोटि के अभिलाषी हो। तुम्हें तो अभी पकड़ में भी नहीं आया। जिस दिन आपकी वृत्ति अविनाशी पद में चली जायेगी, इच्छा रह जायेगी कोई आपके भीतर ? तुम दाता हो जाओगे। कभी कोई ब्रह्मज्ञानी मंगता देखा है आपने? कबीर, नामदेव, गुरूनानक ने कभी उन्होंने बिना नाम के कोई इच्छा की ? जब भी उन्होंने उच्चारण किया लोह (तवा) पर बैठों ने। पढ़ो सारे -

हरि का नामु रिदै नित धिआई।।
संगी साथी सगल तरांई।।
गुरू मेरे संगि सदा है नाले।।
सिमरि सिमरि तिसु सदा सम्हाले।। रहाउ।।
तेरा कीआ मीठा लागै।।
हरि नामु पदारथु नानकु मांगै।। (प ष्ठ ३६४)

बताओ, नाम के बिना कोई इच्छा आई ? फिर, यदि जीव होते तो वहां संसार की इच्छा न आती ? मांगने वालों से तो भगवान भी डरता है। यह हम किसी द्वार पर जायें, डर जाता है। एक समाजी था, हम चले गये, वह थोड़ा सा डरा। हमने कहा - डरा क्यों ? कहता - जी ये आपके वस्त्र डराते हैं। तुम अपने भीतर देखो, तुम्हारा मन जीवपन में खड़ा है कि अविनाशी के साथ एक हो चुका है। निरूद्ध अवस्था हुई है कभी ? नहीं -

तो फिर तो 'मंगता' कोटि में ही आये सब। इसलिये नाम -

गुण निधान भगतन कउ बरतनि

कहते गुणों का आगार क्या है ? भक्तों का व्यवहार कौन सा है ?

सतु संतोखु दइआ धरमु सुचि संतन ते इहु मंतु लई। (प ष्ठ ८२२)

संतों, भक्तों का तो व्यवहार ही है सत्य। लोग बड़े बुद्धिमान हैं -

भगता की चाल निराली।।
चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा।। (प ष्ठ ६१८)

फिर आपके अन्दर आ गया, भक्तों वाला व्यवहार। फिर तुम भक्त कैसे बन गये ? भक्तों का तो व्यवहार ही और है। आप संसारी लोगों का व्यवहार और है।

भगता तै सैसारीआ जोडु कदे न आइआ।। (प ष्ठ १८४)

गुरू साहिब लिख नहीं गये ? वे तो अतुलनीय हैं। जब वह भक्त कोटि से

कबीर आदि चले गये फिर वे संसारी नहीं रहे। जब संसारी जीव ने तो भक्ति नहीं तो भक्तों की गुरू साहिब कहते - यह व्यवहार है भाई !

बिरला पावै कोई।।

यह बात तो किसी विरले को ही प्राप्त होगी। ***'सतु संतोखु दइआ धरमु सुचि'*** यह बुद्धि लेकर फिर तुम परमेश्वर के साथ वृत्ति जोड़ने का अभ्यास करना। श्रवण, मनन करना और फिर अभ्यास करना और फिर समाधि। यह तो निरूद्ध अवस्था हो जायेगी यहां। ऐसे है भाई ! यहां जीवपना टूटना है निरूद्ध अवस्था में जाकर, पहले तो जीवपना। उस जीव ने, इस अविनाशी के साथ एक होना है। बात तो बीच में ऐसे है ना। चलिये -

मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई।।

देखो ! गुरू साहिब की कृपा, कितना श्रेष्ठ यह साधन बताया। फिर पढ़ अब भाई -

मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई।।

वह **'सो'** जो आपके परमेश्वर ने कृपा करके गुरूद्वारे नाम दिया है, जिसका नाम दिया, वह तुम्हारे अन्दर नहीं है ? वह व्यापक नहीं है ? उसका जप करके तुमने यह करना है। यह है तेरा उस स्थान पर अविनाशी में पहुंचने का मार्ग। यह वाणी है, यह वाणी आश्चर्य रूप है, असचर्ज है। कभी-कभी हमें कोई पंक्ति याद नहीं आती, फिर जब हम वहां जाकर एकेले बैठकर याद करते हैं तो आती है। मैं कहता ओहो - वहां तो ऐसे चलना था, तब फिर हमें पता लगता है ऐसे चलना था, थोड़ा सा ऐसा कर गये। जब मन में कोई संकल्प आ जायेगा संसारी, तब फिर भूलकर उक्क जायेगा। वहां जाकर याद आयेगा, ऐसे चलना था लेकिन ऐसे चले गये, अब क्या करें ? इसलिये भाई ! यह आपका मार्ग अविनाशी पद में पहुंचने का है, और यह मार्ग जब तुम चलोगे तो **'सतु संतोखु दइआ धरमु सुचि'** गुरू साहिब आपको आप बतायेंगे।

संतन ते इहु मंतु लई।। (प ष्ठ ८२२)

यह वस्तु तो संतों से प्राप्त होनी हैं, यह बड़ी उच्च वस्तु है। चलें -

जा की सरणि पइआं सुखु पाइअै

कहते - फिर क्या होगा ? कहते - नाम, जब जीव को प्राप्त हो जाये, यह तो कृपा है। आप पढ़ते नहीं हो सुखमनी ? सुखमनी की जब तेरहवीं अष्टपदी पढ़ोगे, उसमें आयेगा भई नाम तो कृपा से मिलना है। जब तुम्हें नाम कृपा से मिल गया, आपका मन, नाम के साथ जुड़ गया तो फिर तुम शरण में होकर अविनाशी में चले जाओगे। नाम मिला तो शरण गये। वे कहते - यह वस्तु है। फिर पढ़ मई सारा -

जा की सरणि पइआं सुखु पाइअै बाहुडि दुखु न होई।। रहाउ।।

जिस परमेश्वर की शरण में जाने से आत्म सुख प्राप्त होगा, वह सुख प्राप्त होगा, अविनाशी। अविनाशी सुख यहां प्राप्त होगा। किन को ? जीवों को। जीवों का यहां वस्तु प्राप्त होगी। अब यहां यह तो नहीं भई फलां को प्राप्त होगी। यह कबीर को हो जाये, नामदेव को हो जाये, रविदास को हो जाये, भीलनी को हो जाये, कोई यहां ठेका है किसी का। न कोई भी जीव हो।

जो जो जपै तिस की गति होइ।। (प ष्ठ २७४)

यह गुरू साहिब ने तो निर्णय कर दिया।

उपदेसु चहु वरना कउ साझा।। (प ष्ठ ७४८)

मैंने आप को कई बार बताया है, मैं निहंगों के पास चला गया, वहां भी तो यह बात हुई।

मैं शरण पड़ा १ ओंकार ( ) की। परमेश्वर तो एक है, दो तो नहीं किसी ने लिखे। दो तो गौतम ने लिखे हैं, न्याय वाले ग्रन्थ में कि एक जीव और एक ईश्वर, नित्य हैं। व्यास आते ही खंडन कर दिया। उसने कहा सत्य एक है कि दो ? उसने कहा - एक। फिर आपने दो क्यों कहे ? नित्य वस्तु एक है। सत्य वस्तु एक है। खंडन कर दिया। परमेश्वर एक है। इसलिये गुरू साहिब १ ओंकार ( ) लिख गये। यह सांझा, सब का एक ही है और हम सब का अधिकार भी एक जैसा है। उसने लिखा कुरान शरीफ में बड़ी अच्छी बात। वह कहता - **'आतमा'** इसका जन्म सिद्ध अधिकार है। यह जब पैदा हुआ तब आत्मा नहीं

थी इसमें ? जब यह गर्भ में था उस समय आत्मा नहीं थी इसमें ? आत्मा तो वही अब भी है तो फिर कैसे कह सकता है ? भई शूद्रों का अधिकार नहीं और स्त्रियों का अधिकार नहीं, इसने खंडन किया, या तो इनमें आत्मा न हो, न तो स्त्रियों में आत्मा हो चेतन और न शूद्रों में हो, फिर तुम कह सकते हो, भई आपका कोई अधिकार नहीं। यह तो जन्म सिद्ध अधिकार है सबका। इसीलिये गुरू साहिब ने लिखा है-

उपदेसु चहु वरना कउ साझा।। (प ष्ठ ७४८)

अब आप स्वयं न खरीदें तो न खरीदें, है तो सांझी वस्तु, समझ गये ? यदि कोई कहे यह मेरा, उसको कहे तुम अपना बना लो, गुरू ग्रन्थ साहिब, स्वंय ही पढ़ लिया करना, स्वयं ही अरदास बना ले। वह तो भई आपका अपना आप है -

कबीर जा कउ खोजते पाइओ सोई ठउरू।।
सोई फिरि कै तू भइआ जा कउ कहता अउरू।। (प ष्ठ १३६६)

यह तो कबीर साहिब की मुहर लगाई हुई है। इसलिये भाई ! शरणागति से वह वस्तु प्राप्त होगी।

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै
इहु बिरदु सुआमी संदा।। (प ष्ठ ५४४)

दुःख तो है नहीं, दुःख तो कल्पित था। संसारिक दुःख सुख हमारे कल्पित हैं। बुद्धि ने कल्पना किये हुई है। ये कभी चेतन में गये हैं ? वह तो गुरू साहिब ने लिखा है -

सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी जा कउ कहत गुसाई।।
सो तुम ही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई।। (प ष्ठ ६३२)

गुरू साहिब कहते, वह तो दुःख सुख रहित निर्लिप्त है। आपका आत्मा निर्लिप्त है। मेरा आत्मा निर्लिप्त है, लेकिन हमें निर्लिप्त का ज्ञान नहीं हुआ। हम लिप्त वाला समझ बैठे हैं, लिप्त तो मन है, मादा। कभी चेतन भी आज तक लिप्त हुआ है ? वह हमें मादे का भ्रम, अध्यात्म में पड़ गया जाकर। हमें समझते हैं, सम्यवतः हम मन ही हैं, इसलिये, वह तो निर्लिप्त है। 'निरलेपता' एक ऐसी मूल्यवान वस्तु है। यह गुरू और परमेश्वर की कृपा से प्राप्त होती है। सीधी बात है -

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

१४

सोरठि महला ५ घरू २ असटपदीआ १ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।
पाठु पड़िओ अरू बेदु बीचारिओ निवलि भुअंगम साधे।।
पंच जना सिउ संगु न छुटकिओ अधिक अहंबुधि बाधे।।१।।
पिआरे इन बिधि मिलणु न जाई मै कीए करम अनेका।।
हारि परिओ सुआमी कै दुआरै दीजै बुधि बिबेका।। रहाउ।।
मोनि भइओ करपाती रहिओ नगन फिरिओ बन माही।।
तट तीरथ सभ धरती भ्रमिओ दुबिधा छुटकै नाही।।२।।
मन कामना तीरथ जाइ बसिओ सिरि करवत धराए।।
मन की मैलु न उतरै इह बिधि जे लख जतन कराए।।३।।
कनिक कामिनी हैवर गैवर बहु बिधि दानु दातारा।।
अंन बसत्र भूमि बहु अरपे नह मिलीऐ हरि दुआरा।।४।।
पूजा अरचा बंदन डंडउत खटु करमा रतु रहता।।
हउ हउ करत बंधन महि परिआ नह मिलीए इह जुगता।।५।।
जोग सिध आसण चउरासीह ए भी करि करि रहिआ।।
वडी आरजा फिरि फिरि जनमै हरि सिउ संगु न गहिआ।।६।।
राज लीला राजन की रचना करिआ हुकमु अफारा।।
सेज सोहनी चंदनु चोआ नरक घोर का दुआरा।।७।।
हरि कीरति साध संगति है सिरि करमन कै करमा।।
कहु नानक तिसु भइओ परापति जिसु पुरब लिखे का लहना।।८।।
तेरो सेवकु इह रंगि माता।। भइओ क्रिपालु दीन दुख भंजनु हरि
हरि कीरतनि इहु मनु राता।।रहाउ दूजा।। १।। ३।। (प ष्ठ ६४१)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु ! सतिनाम श्री वाहिगुरु !! चलो जी -

तुम भी सोच कर यह कर लो, सच्चा और शुद्ध साधन बताया है हरि का कीर्तन, हरि का सुमिरन और हरि का नाम की याद में कीर्तन।

सिमरी सिमरि नामु बारंबार।।
नानक जीअ का इहै अधार।। (प ष्ठ २६५)

जीव के आधार के लिए एक ही बात है, परमेश्वर का सुमिरन। लेकिन तुम्हारा मन, सुमिरन के साथ एक हो जाये। इतनी सी बात है, यह आपके लिए बहुत है।

खोजत खोजत ततु बीचारिओ, दास गोविंद पराइण।
अविनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण।। (प ष्ठ ७१४)

यदि तुम मोक्ष की इच्छा करते हो, अविनाशी पद की प्राप्ति की इच्छा रखते हो, जन्म-मरण से विलग होना चाहते हो तो एक **'नाराइण'** का सुमिरन किया कर।

नाम संगि जिसका भनु मानिआ।।
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।। (प ष्ठ २८१)

यह तो सिद्धांत गुरू घर ने बताया बाद में जाकर, पहले इसके भ्रमों और अभिज्ञता दूर की। हमारे एक वृद्ध संत होते थे। वे कथा करने वाले को कहते होते थे, कुछ पल्लू में भी डाल दिया कर अथवा आप ही लगे रहते हो, तुम इनके दिल में कुछ बैठा भी दिया कर, थोड़ा बहुत, धीरे चला कर। कथा वाले को, अरदास वाले को, ऐसे ढंग से पढ़ना चाहिये कि इनको पता लग जाये भई सिद्धान्त तो यह है। चल भाई पढ़ -

सोरठि महला - ५

सोरठ राग में पंचम पातशाह, पंचम नानक गुरू जी कथन करते हैं।

धरू २ असटपदी आ

यह द्वितीय स्वर में गाना है और 'असटपदीआं' आठों पदों की यह अष्टपदी है।

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

एक जो परमेश्वर है, वह गुरू की कृपा से प्राप्त होता है।

पाठु पड़िओ अरू वेदु बीचारिओ निवलि भुअंगम साधे।।

तीन कार्य हमने किये, गुरू साहिब कहते। वे कहते हैं यह हमने तीन कार्य ठीक प्रकार से देख लिये हैं, पाठ बहुत पढ़ा और वेदों पर भी विचार किया। वह सर्वज्ञ था, सर्वज्ञ तो समस्त ग्रन्थों का विचार कर लेते हैं, और हठ योग भी किया। हठ योग के चक्रों को सिद्ध किया, और हठ योग द्वारा दशम् द्वार को भी गये। लेकिन कोई भी कार्य रास न आया। यह जो वस्तु थी, उस नाम के साथ मन नहीं जुड़ा और नामी प्राप्त नहीं हुआ।

पंच जना सिउ संगु न धुटकिओ

पांच जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध आदि ने भी मेरा पीछा नहीं छोड़ा। इन्होंने मेरी बुद्धि को मलिन कर दिया। विषयों के साथ बुद्धि मलिन हो जाती है, गंदी हो जाती है। इन विकारों ने मेरा पीछा नही छोड़ा। इतने कार्य किये लेकिन मेरा पीछा न छोड़ा।

अधिक अहंबुधि बाधे।।

एक अन्य बीमारी मन में आ गई, अहंकार आ गया कि मैं योगी हूँ, मैंने समस्त वेद-विचार किया है, मेरा जैसा पाठी कोई नहीं, यह एक अहंकार मुझे प्राप्त हो गया। अहंकार के ऐसे पिशाच ने जकड़ा है कि उसने मेरा पीछा ही नहीं छोड़ा।

पिआरे इन विधि मिलनु न जाई।।

हे प्यारे भाई। इन विधियों में तुम प्रभु को प्राप्त नहीं कर सकोगे। इन विधियों में यदि तुम फँस गये तो परमेश्वर को प्राप्त नही कर सकेगा।

मै कीए करम अनेका

मैंने कर्म काण्ड के अनेकों कर्म किये। यह भी मैं कर्म करके रहा, ये भी मैंने बड़े किये।

हारि पटिओ सुआमी कै दुआरै

जब मेरा कोई प्रयत्न काम न आया, तब मैं अपने गुरू स्वामी गुरू रामदास के द्वार पर जा गिरा। मैं गुरू रामदास की शरण पड़ गया। महाराज ! मेरा मन वश में नहीं आता, मुझे नहीं पता, इतना काम मैं कर चुका लेकिन मेरा मन नहीं स्थिर हुआ। अहंकार न मेरी बुद्धि बिल्कुल गंदी, अधिक मलिन कर दी है और मुझे इस वस्तु की प्राप्ति नहीं हुई।

दीजै बुधि विवेका।। रहाउ।।

मुझे वह बुद्धि प्रदान करो जिसमें विवेक हो, दो से एक करने वाली, बिल्कुल एक करने वाली।

हरि हरिजन दुइ एक है बिव विचार कछु नाहीं।।

जलते उपज तरंग जिउ जल ही बिखै समाहि।। (बचित्तर नाटक)

इसलिये जल जो होता है।

जल ते तरंग तरंग ते है जलु कहन सुनन कउ दूजा।। (पृष्ठ १२५२)

लेकिन जल एवं तरंग को दो कहते हैं। वायु जब चलती है उस जल के तरंग बन जाते हैं। जब वायु बंद हो जाती है वही जल स्थिर होकर खड़ा हो जाता है। लेकिन दो नाम इसके वायु के कारण पड़े हैं। वायु न आती तो तरंग न बनते तो जल का जल ही था। इसलिये, माया में मेरा मन फँस गया। इसलिये मुझे वह बुद्धि दो जो दो से एक कर दें और समस्त अध्यस्त झूठे समझे।

द्रिसटीमान है सगल मिथेना।। (पृष्ठ १०८३)

इसमें मुझे निश्चय हो जाये और सत्य स्वरूप की मुझे प्राप्ति हो जाये। मेरा सत्य स्वरूप में मन, मान जाये, एक हो जाए।

सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ।।

करन करावन तिनि मूलु पछानिआ।। (पृष्ठ २८५)

रहाउ।।

'रहाउ' रागियों के लिए होता है। चलें -

मोनि भइओ करपाती रहिओ

कहते - मैंने मौन भी धारण किया और हाथ में पत्ते भी भोज पत्र के लिए और आस-पास भी बांधे वन में जाकर कि मैं यह तप करूँ सम्भवतः तक मुझे ईश्वर की प्राप्ति हो जायेगी।

नगन फिरिओ बन माही।।

और फिर मैंने सब कुछ छोड़कर नग्न होकर वनों में भ्रमण किया, कि किसी व्यक्ति को दर्शन नहीं देना। यहां एक था 'राधा राम' खोख गांव के समीप में (लवाणे) नितांत नग्न जंगल में रहता था। अठारह वर्ष वहा एक छत पर एक फट्टे पर बैठा रहा। वर्षा, फुहार आदि जो कुछ आये वह नहीं उठा इसलिये, मौनी प्रीतम सिंह जो संत था वह भी पांच वर्ष जंगल में घूमता रहा, नग्न होकर और अब तो वस्त्र डालकर आकर बैठ गया। कहता ये कार्य भी मैंने सब किये।

तट तीरथ सभ धरती भ्रमिओ

कहते - सब तीर्थों के किनारों पर गया, स्नान किया, सारी पृथ्वी की परिक्रमा की।

दुबिधा छुटकै नाही।।

द्विधा में दोनों गये, माया मिली ना राम।

इसलिये जब तक इसके भीतर द्विधा है, न इसको परमेश्वर मिले न माया मिली और यह द्विधा मेरे भीतर से नहीं छूटी, भई क्या हुआ है ? और क्या होगा?

मन कामना तीरथ जाइ बसिओ

मन में भी इच्छा और तीर्थों पर जाकर भी निवास किया।

सिरि करवत धराए।।

फिर मैंने अपने सिर ऊपर **'करवत'** (आरा) रखने को कहा। भारत का पहला रिवाज था, अंग्रेजों ने बंद किया था, हमने यह देखा है। एक करवत काशी

है और एक प्रयागराज है। वह जो भी मुक्ति मांगता था, पंडितों का तब राज था, वे कहते थे, करवत ले ले। उस पर मंत्र पढ़ते थे, वे स्त्री के गहने ले लेते थे, उसको कहते थे, अब तुम मुक्त हो जाओगे। वहां भी मैं होकर आया, गुरू साहिब कहते जो यहां भी होकर आये हैं, उनको भी परमेश्वर नहीं मिला है।

मन की मलै न उतरै इह बिधि

ये सब तरीके किये, लेकिन मन की मैल न उतर सकी। विक्षेप न नष्ट हुई, एकाग्र चित्त होकर परमेश्वर की प्राप्ति न हुई। कल्पना बनी रही, मैंने यह किया, मैंने ऐसा ज्ञान प्राप्त किया, मैंने करवत ली, वे समस्त विधियां का वर्णन किया गुरू साहिब ने। यह बात या तो कबीर साहिब बताते होते हैं अथवा गुरू साहिब भी बता देते हैं विस्तार से। ये सब तरीके गलत है भाई। गुरू साहिब कहते - इन सब विधियों को त्याग दे। इस तरफ बिल्कुल न कभी जाना।

जे लख जनत कराए।।

यदि कोई लाख भी यत्न इन कर्मों के कर ले तब भी मोक्ष नहीं होगी, इसका आधार नहीं होगा। आधार तो सुमिरन और लिव में जाकर जब मन ने जुड़ना है तब इसको स्वरूप की, अविनाशी पद की प्राप्ति होनी है। मार्ग तो यह था, लेकिन इन लोगों ने ग्रन्थ लिख दिये बाद वालो ने। यह काम भी किये। लेकिन मैं तुम्हें आज एक बात बताता हूँ, जाकर विचार लो। इलहामी वाणी में यह कोई बात नहीं है। जो ऊपर से वाणी आई है (ईश्वरीय) वह चाहे गुरूनानक को आई है, चाले कबीर को आई है, चाहे रविदास को आई है, चाहे धन्ना को आई है। इन इलहामी वाणियों में ऐसी कोई विधि नहीं आयेगी। ये बुद्धिमान व्यक्तियों की लिखी हुई विधियां हैं। अपनी अपनी दुकानें उन्होंने खड़ी करनी थी। जिस पार्टी के हाथ में कलम आ जाती है वह जैसे खुशी है करती है। वे परमेश्वर के साथ मिले हुये तो होते नहीं और न उनको परमेश्वर का भय होता है। उन्होंने तो पैसे अर्जित करने हैं, किसी प्रकार कमा लो। चाहे कोई अपनी पुस्तक बेचकर कमा लो, चाहे जनता के द्वारा कमा लो, उन्होंने तो कमाई करनी है।

कनिक कामिनी हैवर गैवर

कहते - यह भी सब भोगे **'कनिका'** नाम है सोना। सोना भी बड़ा देखा। **'कामिनी'** स्त्री **'हैवर'** बड़े सुन्दर घोड़े, **'गैवर'** बड़े बड़े सुन्दर हाथी, उन पर भी चढ़कर चले।

बहु विधि दानु दातारा।।

और बड़े दान भी किये, दाता बनकर, अहंकार में भी बैठा। यदि मैं न होता, उनका पता नहीं क्या हाल होता, रोटी मिलती कि न मिलती। एक संत समर्थ गुरू रामदास दक्षिण में हुये हैं। नदी में उन्होंने बारह वर्ष खड़े होकर तप किया। बारह वर्ष पश्चात् उनमें ईश्वरीय शक्ति का आगमन हुआ और उन्होंने शिवाजी को जो उनका शिष्य था, कई शिष्य थे उनके। उनमें से शिवाजी को कहा- जा ओये, किला बना। ये अत्याचार बहुत करते हैं मुसलमान। अब ये हमारी इज्जत को भी हाथ डालने लग गये हैं। इनका बड़ा जोर हो गया, किला बना जाकर। वह कहता - जी मेरे में तो शक्ति ही कोई नहीं। वे कहते - मैं तुझे कहता हूँ किला बना। वह कहता - जी सत्वचन। वह किला बनाने लग गया, पैसा बहुत आ गया। लोगों ने बड़े बड़े व्यक्तियों ने उसकी बड़ी सहायता की। यदि यह भी इज्जत बचा ले अब हमारी तो भी ठीक है और एक दिन उसमें अहंकार आ गया। वहां बड़ा अकाल पड़ गया। उसने कहा यदि मैं यह किला न बनाता तो ये सब भूखे मर जाते। मैं किला बनाने लगा तब ये रोटी खाते हैं। समथ गुरू रामदास जंगल में पड़े थे वहां से उठकर चल पड़े दोपहर का समय था, आये। शिवाजी ने आ रहे गुरू को देख लिया, आकर उनके चरणों में पड़ा मत्था टेका। महाराज ! क्या बात है ? कहते एक बात बता ? कहते - मिस्त्री अपने अच्छ अच्छे बुला। उसने बुलाये। इस पत्थर को चीरों लेकिन संभलकर। इसमें एक जीव बैठा है, उसको निकालना है। जब उसको चीरा उसमें जल था। पत्थर में एक मेंढक बैठा था जिसको ड्डडू कहते हैं। समर्थ महाराज कहते - शिवाजी को बुलाकर कि इसको भी आजीविका देते हो ? उसने कहा - ओ हो। मेरे दिल में संकल्प आया था, यदि मैं न तो देने वालातो ये सब मर जाते। समर्थ जी कहते - यह तेरे आसरे ही जीता है मेंढक? वह चरणों पर गिर पड़ा। कहता जी मैं भूल गया, मेरे हृदय में अहंकार आ गया

दातापन का। वे गुरू साहिब कहते - दाता बनकर बड़े यज्ञ भी किये लेकिन अहंकार न टूटा। अपितु अहंकार बढ़ता ही चला गया।

अंत बसत्र भमि बहु अरपे

कहता - अन्न, वस्त्र और भूमि बड़ी दान की, भूमि भी बड़ी दान की, अन्न दान किया, वस्त्र भी बड़े दान किये।

नह मिलीऐ हरि दुआरा।।

और यह जो हरि है परमेश्वर, इसके द्वार पर खड़े होने के लिए स्थान न मिला। परमेश्वर के द्वार पर खड़े होने के लिए स्थान न मिला। वह अहंकार ने ऐसा मुझे पकड़ा, अहंकार तो पिशाच है ससुरा। भूत - तो मंत्र से निकल जाता है पिशाच नही निकलता। यह जो पिशाच है, इसको तो कोई बड़ा भारी शक्तिमान गुरू हो तो निकाल दे अथवा परमेश्वर निकाल दे यह व्यक्ति के निकालने का नहीं है। इसकी तो औषधि ही एक है।

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इखु माहि।।
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि।। (प ष्ठ ४६६)

परमेश्वर की कृपा इस पर हो, यह गुरू-शब्द की कमाई करे तब इसका अहंकार टूटे तो यह **'भीत'** अर्थात् दीवार अलग हो तब इसको परमेश्वर का द्वार दिखाई दे।

पूजा अरचा बंदन डंडउत

कहता - कर्म काण्ड भी बहुत किया जिसको लोग बहुत अच्छा समझते हैं। बड़ी पूजा की, बड़े दण्डवत प्रणाम किये, बड़े अर्पण किये। किसी ने शीश अर्पण किया, किसी ने कुछ अर्पण किया। वे कहते - यह भी मैंने सारा किया।

खटु करमा रतु रहता।।

छः प्रकार के कर्मों के साथ 'रतु अर्थात् हर समय लगा रहा लेकिन साथ में यह भी आ गया कि मेरे जैसा कर्म काण्ड करने वाला अन्य कोई नहीं है। ये छः कर्म सब के अलग अलग हैं। ब्राह्मण के छः कर्म हैं - पहले विद्या का पठन, फिर अध्यापन, दान लेना, आगे देना, यज्ञ करना और करवाना भी। जो पैसा अग्नि से आये उसका भी यज्ञ करना, ये ब्राह्मण के पहले कर्म हैं। खत्री आदि सब के कर्म हैं। मैं उनमें लगा रहा, मैंने हर समय यह छः कर्म **'खट करम'** किये।

हउ हउ करत बंधन महि परिआ

कहते - बीमारी एक ऐसी चिपकी **'हउ हउ कटत'** कि मेरे जैसा कर्म काण्ड करने वाला कोई नहीं। मेरे समक्ष दानी कोई नहीं, मेरे जैसा चालीहा करने वाला भी कोई नहीं। इन बंधनों में फॅसकर क्या बना ? फिर पढ़ पंक्ति -

हउ हउ करत बंधन महि परिआ

'हउ हउ' अहंकार वश जन्म जन्म के बंधनों में पड़ा। अहंकार न टूटा अपितु अहंकार बहुत बढ़ गया।

नह मिलीऐ इह जुगता।।

गुरू साहिब कहते - भाई ! यह युक्ति से प्रभु नहीं मिलेगा, सीधी बात है। जो आपको बताया है, इन युक्तियों से प्रभु नहीं मिलेगा। ये आपके विचार श्रेष्ठ हैं लेकिन परमेश्वर को मिलने का यह तरीका नहीं।

जोग सिध आसण चउरासीह

कहते - फिर हठ योग किया, सिद्ध किया हठ योग को। चक्र भी सारे खोले और दशम् द्वार को भी गया और चौरासी आसन भी किये।

ए भी करि करि रहिआ।।

यह भी गुरू साहिब कहते - कर कर के हम थक चुके। इनके साथ भी परमेश्वर नहीं मिला। हठ योगी में अहंकार आ जाता है। गुरू अमर दास जी ने अब गद्दी दी, सब को बुलाया और मोहन बड़ा पुत्र था, वह हठ योगी था, उसको बुलाया। वह कहता - मैं नहीं जाऊंगा, उन्हें तो पता नहीं किसको गद्दी देनी है, यह तो अधिकार ही हमारा था। ये तो जेठे को ही दिये जा रहे हैं, गुरू रामदास को और मोहन न आया, बुलाया बिल्कुल न आया।

मोहरी पुतु सनमुख होइआ

रामदासै पैरी पाइ जीउ।। (प ष्ठ ३५०)

हम यह बात निर्णय करके देखते हैं अब भल्ला परिवार में। मैंने कहा तुम किसी वंश में से हो। हम जी - मोहरी की कुल में से हैं और गुरू साहिब ने कहा भाई ! सब कुछ करो, उसे ईर्ष्या की पीड़ा होती है और ईर्ष्या की पीड़ा हुई। दो दिन के पश्चात् गुरू साहिब के पास पहुंचा मुझे भई आप जाते हुए क्षमा कर दो। वे कहते - अब तुम्हें इस सिक्ख के पैरों में पड़ना पड़ेगा। जब तुम चरणों में पड़ोगे तब तेरी पीड़ा दूर होगी। ये पोथियां किसी को न देना, संभाल कर रखना। भाई गुरदास गये, उसने कहा पोथियां आपकी नहीं अब मामा जी। ये तो पोथियां गुरू-घर की हैं। बाबा बुड्ढ़ा जी गये, उनको भी नहीं दी। फिर गुरू साहिब गये, उन्होंने यह शब्द पढ़ा -

मोहन तेरे ऊचे मंदर महल अपारा।। (प ष्ठ २४८)

वह पढ़कर जब गुरू-साहिब हट गये। उसने पोथियां लाकर, रखकर, अपना मस्तक गुरू अर्जुन देव के चरणों में रख दिया। उसने कहा हम बहुत बड़ी भूल कर चुके हैं, आप गुरू हो, हम आपके शिष्य हैं। उसी समय पीड़ा बंद हो गई, यह हाल हुआ। यह अहंकार जो जकड़ लेता है, मैं बड़ा योगी हूँ, मैं बड़ा ज्ञानी हूँ मैं पंडित हूँ, मैं भक्त हूँ, ये सब बीमारियां अहंकार की है। जब इस को ज्ञान हो जायेगा तो ये बीमारियां स्वयं ही छूट जायेगी बिना पूछे ही।

वडी आरजा फिरि फिरि जनमै

कहते - आयु लम्बी कर लेता है और बार-बार जन्मों के चक्र में पड़ा रहता है।

कई जनम भए कीट पतंगा।।
कई जनम गज मीन कुरंगा।। (प ष्ठ १७६)

लेकिन जन्म-मरण से मुक्त नहीं हुआ।

हरि सिउ संग न गहिआ।।

लेकिन मन, हरि के नाम के साथ नहीं जुड़ा। मन नाम के साथ एकम नहीं हुआ। हरि परमेश्वर के साथ सम्बन्ध न हुआ मोक्ष न हुई, कृपा न हुई।

राज लीला राजन की रचना

कहते - **'राज लीला'** यह राजाओं की एक रचना होती है। राजाओं का एक स्वभाव ही है। यह 'राज लीला' एक स्वभाव है। एक पंडित निश्चल दास जी हुये हैं, उन्होंने **'विचार सागर' 'बिरती प्रभाकर'** ग्रन्थ लिखे हैं, बड़े बुद्धिमान उनको कहते हैं। जीविकानंद जी कहते हम गये, जिनसे हमने वृत्ति प्रभाकर पढ़ा। वे घोड़ी पर बैठे जाते हैं, घोड़ी को दौड़ाते जाते हैं। जब इन्होंने बुलाये संत कहते साधु न कहना, मैं पंडित हूँ, पंडित की लीला करता हूँ, साधु न कहो, मैं साधु तो नहीं हूँ। कहते मैं पंडित हूँ, पंड़ितो वाली कोई शंका पूछो मेरे से। यह पंडित की लीला होती है और राजाओं की लीला भी होती है।

करिआ हुकमु अफारा।।

हुकम भी बहुत बड़ा किया, जो हुकम किया उसका उचित अनुचित न देखा, हुकम भी बड़ा किया है।

सेज सोहनी चंदनु चोआ।।

बड़ी बड़ी सेज संवारी, उन्होंने चंदन का छिड़काव किया और बहुत सुंदर पुष्प बिछाये। उन पर सोकर देखा।

नरक घोर का दुआरा।।

वे कहते - यह सब कुछ तो भयानक नरक की ओर ले जाने वाला है, विषय, विकार, विषयी व्यक्ति तो नरक को जाता होता है, उसमें तो कोई सत्य ही नहीं रह गया। उसकी बुद्धि तो अत्यंत मैली हो जाती है, उसको तो सूझता ही नहीं है। वे कहते - भयानक नरक का सामान ही बनाया।

हरि कीरति साध संगति है

कहते - एक आत है, बता भी दूँ।

है कोऊ ऐसा भीतु जि तोरै बिखय सांठि।
नानक इकु स्रीधर नाथु जि टूटू लेइ सांठि।। (प ष्ठ १३६३)

कहता कोई ऐसा भी है जो जड़ चेतन की ग्रन्थि को तोड़ दे और परमेश्वर के साथ जोड़ दे।।

करि किरपा सतसंगि मिलाए।।
नानक ता कै निकटि ना भाइि।। (पृष्ठ २५१)

यह इस माया कोपार करने वाला 'साधु संगति' है। उसमें मिलकर हरि का कीर्तन करना, सुमिरन करना। सुमिरन और अनाहत, अनाहत और धुनि, धुनि द्वारा लिव (लौ) लग जायेगी। अविनाशी पद की प्राप्ति हो जायेगी, मोक्ष हो जायेगी। यह एक उपाय है। फिर पढ़ दो भाई।

हरि कीरति साध संगति है।

कहते - यह है हरि की कीर्ति, साधु संगति से मिलती है। यह उपाय है। **'है'** पहले लगान है। 'है' अर्थात् उसका उपाय, पहले हरिकीर्तन, साधु संगति से सीखना है। हरि का कीर्तन, गायन उसमें संसार की बातें नहीं करनी हैं। उसमें भटके हुये लोगों को दृष्टांत नहीं देने हैं फँसाने के लिए। एक कीर्तन करना, हरि सुमिरन करना।

सिरि करमन कै करमा।

समस्त कर्मों का सवोत्कृष्ट एक कर्म है भाई ! गुरू साहिब कहते - हम आपको बताते हैं। सभी कर्मों का सर्वोत्कृष्ट कर्म यह कर्म है, जो इस नाम का सुमिरन करना है।

सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।
नानक जीअ का इहै अधार।। (पृष्ठ २६५)

यह समस्त कार्यों का सर्वोत्कृष्ठ कर्म है।

कहु नानक तिसु भइओ परापति

श्री गुरू अर्जुन देव जी कहते - उनको यह प्राप्त होना है।

जिस पुरब लिखे का लहना।।

जिसका पूर्वकृत 'लहना' अर्थात् कर्म होगा। पूर्व कर्म भी सहायता करता है। ध्रुव को पूर्व कृत कर्म ने सहायता की, पांच वर्ष में ही ज्ञान हो गया। प्रहलाद को, पूर्वकृत कर्मों ने ऐसी सहायता की, वह पहले ही जन्म लेते ही **'राम-राम'** कहने

लग गया। तुम्हे पता है इस कहानी का ? यह एक कहानी है। जब देवताओं ने उन दैत्यों को आकर मारा और जीत लिया। वह स्त्री के पेट में गर्भ था। वे कहते - यदि इस ससुरे ने जन्म ले लिया तो यह भी उपद्रव करेगा। चलों - इसका भी करो कुछ। आगे नारद मिल गया। नारद कहता - क्या किया ? कहते - जी हम जीत गये, हमने राक्षसों ने जीत लिया। कहते - यह कौन ? कहते इस लड़की के पेट में गर्भ है, इसको हम तो ले चले हैं, भई एक राक्षस और न पैदा हो जाये कहते - क्या करें ? नारद कहता कुल नाश हो जाएगा आपका सारा। कहते क्यों? कहते भक्त है, तुम्हे क्या पता है ? यह तो भीतर भक्त बैठा है। वे वहीं छोड़कर चले गये। नारद ने कहा हे माँ उस झोपड़ी में जाकर बैठ जाओ, तुम्हारा पालन होगा लेकिन **'राम राम'** कहती रहना। **'राम'** मंत्र उसको दे दिया, वह जपने लग गई। उससे प्रहलाद का जन्म हुआ। वह गर्भ में ही कथा नारद की सुनता रहा। वह गर्भ में ही नाम जपने लगा। यह देखो पूर्वकृत कर्म ने किया। राक्षसों के वह **'कलर कमल'** यह कीच से चली थी कुल लेकिन वहां कमल उत्पन्न हुआ - भक्त प्रहलाद। इसलिये उसको (नारद को) सर्वज्ञता थी, इसने उसका बड़ा पालन किया, बड़ा उपदेश किया। जन्म लेते ही **'राम राम'** जपने लगा। उसने बड़ी तपस्या की और ब्रह्मज्ञानी एक महापुरूष हुआ।

तेरो सेवकु इह रंगि भाता।

तुम्हारे सेवक जो इस रंग में मस्त रहते हैं, वे दूसरी बातें नहीं सुनते होते, व्यर्थ जो होती हैं।

भइओ क्रिपालु दीन दुःख भंजन

वह कृपालु हुआ, समस्त दीनों के दुख को दूर करने वाला प्रभु मेरे पर बड़ा दयालु हुआ - गुरू अर्जुन देव जी कहते।

हरि हरि कीरतनि इहो मन राता।। रहाउ।। दूजा।।

मेरा भी उस हरि के कीर्तन में मन रम गया। गुरू साहिब कहते - मैं भी परमेश्वर का कीर्तन, नाम जपने लग गया।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू। ❑